

वर्ष: 16 | अंक : 10 | अक्टूबर 2025 | मूल्य: ₹ 10 /=

हंसलोक संदेश



विजयदशमी की हार्दिक शुभकामनाएं!

भारतीय संस्कृति, अध्यात्म व सामाजिक एकता की प्रतीक हिंदी मासिक पत्रिका



हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान व सामाजिक एकता की प्रतीक

वर्ष-16, अंक-10

अक्टूबर, 2025

आश्विन-कार्तिक, 2082 वि.स.

प्रकाशन की तारीख

प्रत्येक माह की 5 व 6 तारीख

मुद्रक एवं प्रकाशक-

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति (रजि.)

श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, (खसरा नं. 947),
छतरपुर-भाटी माइंस रोड, भाटी, महरौली,
नई दिल्ली-110074 के लिए मंगल द्वारा
एमिनेंट ऑफसेट, डी-94, ओखला इण्डस्ट्रियल
एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110020
से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक- राकेश सिंह

मूल्य-एक प्रति-रु.10/-

पत्राचार व पत्रिका मंगाने का पता:

कार्यालय: हंसलोक संदेश

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति,

B-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,

छतरपुर, नई दिल्ली-110074

मो. नं. : 8800291788, 8800291288

Email: hansloksandesh@gmail.com

Website: www.hanslok.org

Subject to Delhi Jurisdiction

RNI No. DEL.HIN/2010/32010

संपादकीय

ब्रह्ममुहूर्त है साधना का मुहूर्त

आध्यात्मिक साधना एक महत्वपूर्ण साधना है, जो निरंतर, दीर्घकाल तक पूरी श्रद्धा, विश्वास और उत्साह के साथ की जाती है। साधना का समय ब्रह्म-मुहूर्त से उपयुक्त और कोई नहीं होता। इसके लिए ब्रह्म-मुहूर्त को समझना जरूरी है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार 24 घंटे में 30 मुहूर्त होते हैं। जिसको हम ‘ब्रह्ममुहूर्त’ कहते हैं, वह रात्रि का चौथा प्रहर होता है। सूर्योदय से पहले के प्रहर में दो मुहूर्त होते हैं। उनमें से पहले मुहूर्त को ब्रह्म-मुहूर्त और दूसरे को विष्णु-मुहूर्त कहते हैं। दिन-रात का 30वां भाग मुहूर्त कहलाता है। एक घंटी में 24 मिनट होते हैं और 2 घंटी यानी 48 मिनट का एक मुहूर्त कहलाता है। अतः लगभग सूर्योदय से 96 मिनट पहले ब्रह्म-मुहूर्त शुरू हो जाता है। ब्रह्म-मुहूर्त में सूर्य का सीधा संबंध पृथ्वी से होता है। इस समय ब्रह्माण्ड में प्राण-तत्व प्रचुर मात्रा में विद्यमान होता है। प्राण-शक्ति की प्रचुरता के कारण इस समय हमारी चेतना की ऊर्ध्वगति होने लगती है। यही वो समय है, जब आध्यात्मिक साधना के माध्यम से चेतना को ऊर्ध्वगति प्रदान की जा सकती है।

इसलिए ब्रह्म-मुहूर्त आध्यात्मिक साधना के लिए सबसे महत्वपूर्ण काल माना जाता है। हमारे ऋषियों ने अनेक अनुसंधान के बाद इस मुहूर्त को सबसे ज्यादा दिव्य कहा है। ब्रह्म-मुहूर्त के समय यदि हम साधना करते हैं, तो हमारे भीतर सोयी हुई सुप्त शक्तियों का जागरण होने लगता है। वैसे भी इस समय हमारा श्वास सुषुम्ना नाड़ी में गति कर रहा होता है और सुप्त शक्तियों का स्थान इसी नाड़ी की गहराइयों में होता है। ब्रह्म-मुहूर्त में प्रकृति पूरी तरह से शांत होती है, मन में विचारों का आना-जाना अन्य समय की अपेक्षा काफी कम होता है। इसलिए शौच आदि से निवृत्त होने के पश्चात् उत्तर-पूर्व की तरफ मुँह करके सुखासन में सहज भाव से कमर और गर्दन सीधी कर बैठ जायें। सद्गुरु प्रदत्त साधना का पूर्ण मनोयोग से अभ्यास करें। इस प्रकार नित्यप्रति के अभ्यास से आश्र्वयचकित ढंग से साधक अंतर्मुखी होता जायेगा और आत्म-साक्षात्कार को उपलब्ध हो जायेगा। ■

अतः निद्रा, प्रमाद और आलस्य का परित्याग कर ब्रह्म-मुहूर्त में जागें, केवल जागें ही नहीं अपितु अपनी साधना के माध्यम से अपनी आत्म-चेतना से जुड़े तभी ब्रह्म-मुहूर्त में जागना सार्थक होगा। ■



**प्रेम, वात्सल्य और करुणा की सागर
परमाराध्या माताश्री मंगला जी के पावन जन्मदिवस
(16 अक्टूबर, 2025) पर सभी सन्त-महात्माओं एवं
प्रेमी भक्तों की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं!
आप सदैव स्वस्थ, यशस्वी, कीर्तिमान और दीर्घजीवी हों,
यही हम सबकी परमेश्वर से प्रार्थना है।**

प्रेम, वात्सल्य एवं करुणा की सागर हैं माताश्री मंगला जी

वै दिक काल से ही भारत देश ऐसे अनेक ऋषि-मुनियों, संत-महापुरुषों, दानवीरों, शूरवीरों, चिंतकों व मनीषियों की जन्म तथा कर्मभूमि रहा है जिन्होंने अपने ज्ञान, कर्म और शिक्षा के द्वारा अखिल विश्व के मानव हृदयों में शांति, एकता, प्रेम और सद्भाव की ज्योति जलाई। उन्होंने अपने-अपने समय में अज्ञानतावश, अंधविश्वास, परंपराओं, पूजा-पद्धतियों, मतों और पंथों में भटकती मानवता को ज्ञान ज्योति प्रदान कर उसका पथ प्रदर्शन किया। साथ ही शोषित, वंचित, पीड़ित, असहाय, जरूरतमंद तथा कमजोर वर्ग के लोगों

की मदद करके मानव समाज को सेवा व परोपकार के लिए प्रेरित किया। उन महापुरुषोंने मानव समाज को समझाया कि मनुष्य शरीर भगवान का जीता-जागता मंदिर है जिसमें वे स्वयं निवास करते हैं। जो लोग भगवान के बनाये हुए मनुष्यों से प्रेम करते हैं, भगवान उनसे प्रेम करते हैं। ऐसे ही महापुरुषों की श्रृंखला में एक नाम है- महान अध्यात्मिक विभूति डॉ. माताश्री मंगला जी का, जो अध्यात्म

ज्ञान प्रदान कर मानव हृदयों को प्रकाशित कर रही हैं। वे दया, करुणा, ज्ञान, वात्सल्य तथा मानव सेवा की सजीव प्रतिमूर्ति हैं। जो भी व्यक्ति प्रेम और श्रद्धाभाव से उनके पास आता है, वे उसे अपना अध्यात्म ज्ञानामृत प्रदान कर उसके जीवन के समस्त कलह-क्लेशों का हरण कर उसे शाश्वत सुख, शान्ति व प्रेम से सराबोर कर देती हैं। वे जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा और वर्गभेद से ऊपर उठकर सभी दीन-हीन जरूरतमंद लोगों की सेवा-सहायता निःस्वार्थ भाव से कर रही हैं।

करुणामयी डॉ. माताश्री मंगला जी को आज कौन नहीं जानता। उनके

तेजस्वी, सौम्य, धीर-गम्भीर, प्रेम, दया से भरे दिव्य व्यक्तित्व ने सभी को अपनी ओर आकर्षित किया है। वे जहाँ भी जाती हैं, उनके दिव्य सानिध्य को प्राप्त करने के लिए लोग सहज ही उनकी ओर खिंचे चले आते हैं। श्री माता जी भी उन्हें अपने दिव्य सानिध्य, साहचर्य और संगति से वंचित नहीं करतीं। आज वे सभी के लिए प्रेरणा की स्रोत बनी हुई हैं। डॉ. माताश्री मंगला जी ने अपने सहज,



16 अक्टूबर, पावन जन्मदिवस पर विशेष

सरल व ममत्व भरे स्वभाव से सभी को अपनी ओर खींचा ही नहीं है, अपितु उन्हें यह सोचने पर विवश किया है कि कैसे कोई इतना सरल होकर भी इतने बड़े-बड़े धर्मार्थ और जनसेवा के कार्य कर सकता है! माताश्री मंगला जी सदैव लोगों को समझाती हैं कि हम तो केवल निमित्त मात्र हैं, करने-कराने वाला कोई और है जो निरंतर हमें प्रेरित ही नहीं करता, बल्कि पग-पग पर वह हमारे अंग-संग रहकर शक्ति भी प्रदान करता है। हमें जिन महाप्रभु श्री हंस जी महाराज ने ज्ञान और परमार्थ का रास्ता दिखाया तथा जिन जगतजननी माताश्री राजेश्वरी देवी जी से हमें जनसेवा की प्रेरणा मिली, आज वे ही हमारी शक्ति व प्रेरणा बने हुए हैं। डॉ. माताश्री मंगला जी की इसी विनम्रता और निराभिमानता की वजह से वे सबकी प्रिय माता जी बन चुकी हैं।

करुणामयी डॉ. माताश्री मंगला जी का जन्म 16 अक्टूबर, 1956 को उत्तराखण्ड के टिहरी गढ़वाल जिला के पांगर गांव, सारज्यूला पट्टी में एक धर्मपरायण परिवार में हुआ। इनके पिता श्री मातवर सिंह सजवाण को भारतीय सेना में देश सेवा के लिए भारत सरकार ने शौर्यचक्र सम्मान से विभूषित किया था।

डॉ. माताश्री मंगला जी बच्चों को परिवार, समाज और राष्ट्र का भविष्य मानती हैं। इसलिए उनका मानना है कि नवचिराग बच्चों के लिए भौतिक शिक्षा के साथ-साथ आध्यात्मिक शिक्षा भी बहुत जरूरी है, क्योंकि भौतिक शिक्षा जहाँ उन्हें जीविकोन्मुखी ज्ञान कराएगी, वहाँ आध्यात्मिक शिक्षा उन्हें एक ज्ञानवान, चरित्रवान और दयावान विवेकयुक्त मनुष्य बनाएगी। जो एक आदर्श नागरिक बनकर राष्ट्र, समाज व परिवार के निर्माण में अपना रचनात्मक योगदान प्रदान कर सकेंगे। माताश्री मंगला जी का कहना भी है कि एक प्रज्ज्वलित दीपक ही दूसरे बुझे हुए दीयों को प्रकाशित कर सकता है। जो स्वयं ही अंधकार में है, वह दूसरों को प्रकाश कैसे दे सकता है? अध्यात्म ज्ञान के प्रचार तथा मानव सेवा की प्रेरणा उन्हें योगिराज श्री हंस जी महाराज एवं जगत जननी माताश्री राजेश्वरी देवी जी से मिली।

श्री हंस जी महाराज एवं माताश्री राजेश्वरी देवी मूल रूप से विकासखण्ड पौखड़ा, जिला पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड के निवासी थे। इन्हीं महापुरुषों के आशीर्वाद से आज माताश्री मंगला जी अपने पति परमपूज्य श्री भोले जी महाराज की सहधर्मिणी बनकर मानवता और सामाजिक उत्थान के लिए अनेक परियोजनाओं का संचालन कर रही हैं; जिनमें श्री हंस करुणा स्वास्थ्य परियोजना, राजेश्वरी करुणा शिक्षा परियोजना, गरीब, वृद्ध, दिव्यांग एवं विधवा मासिक पेंशन योजना, राजेश्वरी करुणा स्वरोजगार योजना, हंस गौशाला योजना, शिवांश खेती, शिवांश खाद तथा निःशुल्क चिकित्सा शिविर योजना आदि प्रमुख हैं।

डॉ. माताश्री मंगला जी ‘द हंस फाउण्डेशन’, ‘हंस कल्वरल सेंटर’ तथा ‘श्री हंसलोक जनकल्याण समिति’ जैसी धर्मार्थ, सामाजिक एवं आध्यात्मिक संस्थाओं की प्रेरणास्रोत हैं। उनके मार्गदर्शन में ये संस्थाएं देश के विभिन्न भागों में निर्धन, जरूरतमंद तथा असहाय लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने, गरीब बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दिलाने, विधवा, परित्यक्ता, निर्धन एवं बेसहाया महिलाओं के उत्थान के लिए स्वयं सहायता समूह एवं सहकारी समितियों के माध्यम से रोजगारोन्मुखी अभियान, पर्यावरण के संतुलन के लिए सघन वृक्षारोपण, गांव व घरों में शुद्ध वातावरण बनाये रखने के लिए सामूहिक शैचालयों का निर्माण अभियान के साथ-साथ उनके आध्यात्मिक, नैतिक व चारित्रिक विकास के लिए निरंतर प्रयास कर रही हैं। श्री हंस करुणा स्वास्थ्य परियोजना के तहत सतपुली, जिला पौड़ी गढ़वाल में गरीबों के इलाज के लिए आधुनिक सुविधाओं से युक्त ‘द हंस फाउण्डेशन जनरल हॉस्पीटल’ का संचालन किया जा रहा है। इस अस्पताल से प्रतिमाह हजारों रोगी इलाज कराकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं। हरिद्वार, बहादराबाद में ‘द हंस फाउण्डेशन आई केयर’ का संचालन किया जा रहा है। इसके ओपीडी, आईपीडी तथा निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविरों द्वारा हर महीने हजारों लोगों की आंखों को रोशन

किया जा रहा है।

द हंस फाउण्डेशन विभिन्न प्रदेशों की सरकारों के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, पर्यावरण, कृषि, वन, महिला सशक्तिकरण तथा दिव्यांग कल्याण से जुड़े विकास कार्यक्रमों में सहभागिता निभा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं पर स्थित गांवों व विद्यालयों में सभी मूलभूत सुविधाएं प्रदान करने पर जोर-शोर से कार्य चल रहा है। विद्यालयों में यूनिफार्म, बस्ता, पाठ्य सामग्री व पुस्तकें प्रदान करने के साथ-साथ निःशुल्क चिकित्सा शिविरों के माध्यम से उन्हें नियमित रूप से चिकित्सकीय परामर्श और दवाइयां भी प्रदान की जा रही हैं। अस्पतालों को सैकड़ों एम्बुलेंसें और पुलिस विभाग को अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त सैकड़ों गश्ती वाहन उपलब्ध कराये गये हैं। द हंस फाउण्डेशन के सौजन्य से जनहित में कई अस्पतालों में आई बैंक और ब्लड बैंक की स्थापना की गयी है जिनका निरंतर कुशलता पूर्वक संचालन किया जा रहा है।

द हंस फाउण्डेशन तथा हंस कल्वरल सेंटर द्वारा देश के बड़े-बड़े धार्मिक व सांस्कृतिक मेलों तथा राष्ट्रीय पर्व-त्योहारों पर निःशुल्क चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया जाता है, जिससे हजारों श्रद्धालुओं तथा तीर्थयात्रियों को स्वास्थ्य लाभ मिलता है। ‘हंस कल्वरल सेंटर’ द्वारा गरीब तथा जरूरतमंदों का विभिन्न अस्पतालों में इलाज कराने में आर्थिक सहयोग दिया जाता है। बालाजीपुरम व भाटी, नई दिल्ली तथा नेहरूग्राम, देहरादून में हंस गौशालाओं का संचालन किया जा रहा है। राजेश्वरी करुणा शिक्षा परियोजना के तहत गरीब बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दिलाने के लिए हंस कल्वरल सेंटर द्वारा विभिन्न विद्यालयों के संचालन में आर्थिक सहयोग प्रदान किया जा रहा है। गरीब छात्र-छात्राओं को शिक्षा एवं कोर्स के लिए आर्थिक सहायता भी दी जाती है। इसके साथ ही दैवीय आपदा पीड़ितों, बाढ़ पीड़ितों तथा भूकम्प पीड़ितों के लिए समय-समय पर राहत सामग्री जैसे राशन, कम्बल, कपड़े आदि जीवनोपयोगी सामग्री भेजी जाती रही है। आसाम के पिछड़े क्षेत्र में जनजातीय सामूहिक विवाह का आयोजन कराया गया जिसमें

10000 से अधिक वर-वधु को घरेलू जरूरत की वस्तुओं के साथ आशीर्वाद प्रदान किया।

डॉ. माताश्री मंगला जी एवं श्री भोले जी महाराज की प्रेरणा से आध्यात्मिक ज्ञान के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु हंसज्योति-ए यूनिट ऑफ हंस कल्वरल सेंटर के तत्वावधान में देशभर में विशाल जनकल्याण समारोहों का आयोजन किया जाता है, जिनमें श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी सर्वधर्म शास्त्र सम्मत प्रवचनों के माध्यम से धर्म के मूल तत्व अध्यात्म का व्यावहारिक बोध प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। वे समाज में धर्म के नाम पर फैले पाखंड, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता और असंगत परंपराओं की वास्तविकता को बताकर धर्म के वास्तविक स्वरूप का बोध करा रहे हैं। वे लोगों के हृदय के अज्ञानान्धकार को दूर कर अध्यात्म ज्ञान का व्यावहारिक बोध कराकर उनके हृदय को ज्ञान-ज्योति से आलोकित कर रहे हैं। इस अध्यात्म ज्ञान प्रचार के साथ जनसेवा के कार्यों को करते हुए रामचरित मानस की इस चौपाई को चरितार्थ कर रहे हैं-

परहित सरित धर्म नहीं भाई।

परपीड़ा सम नहिं अधमाई॥।

अर्थात् परहित से बढ़कर कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा पहुँचाना सबसे बड़ा अधर्म है। इस महतनीय कार्य में उनके सैकड़ों शिष्य, भक्त, सेवक और महात्मागण तथा बाईंगण भी दिन-रात अथक परिश्रम कर रहे हैं। वे देश-विदेश में गांव-गांव, नगर-नगर धूम-धूमकर जनकल्याण समारोहों के माध्यम से लोगों को अध्यात्म ज्ञान को जानने के लिए प्रेरित कर रहे हैं और जिज्ञासुओं को उसका प्रत्यक्ष बोध भी करा रहे हैं।

ऐसी महानतम् विभूति हम सबकी परमपूज्या करुणामयी डॉ. माताश्री मंगला जी के पावन जन्म-दिवस 16 अक्टूबर पर उनके पावन श्री चरणों में बारंबार प्रणाम करते हुए परमेश्वर से उनके स्वस्थ, सबल, यशस्वी एवं आनन्दमयी दीर्घ जीवन की प्रार्थना करते हैं। हम सबको इसी तरह निरंतर उनका पुनीत सानिध्य मिलता रहे, यही हमारी भावना है। ■

निगुरा महल न पाइयां, पहुँचेगा गुरु पूर

परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! हम सभी जानते हैं कि रावण को सोने की लंका और परिवार का बहुत अभिमान था, परन्तु मरते समय उसके परिवार में कोई दिया जलाने वाला भी नहीं रहा। इसलिए झूठे अभिमान में मनुष्य तन को व्यर्थ न गँवाओ! यह मनुष्य शरीर आत्मा की शान्ति के लिए मिला है। शरीर के बाद ही धन, स्त्री और पुत्र आदि मिलते हैं, जो कि सब आने-जाने वाले हैं। संत कहते हैं-

सुमिरण बिन गोता खावेगा।
क्या लेकर तू आया जगत में,
क्या लेकर तू जावेगा।
बिन सतनाम के नक्क पड़ेगा,
फिर चौरासी जावेगा।

विचार करो कि तुम इस संसार में माता के गर्भ से क्या लेकर आये थे और मरते समय संसार की कौन-सी चीज लेकर जाओगे। भगवान के अमृत नाम का सुमिरण किये बिना तो चौरासी में ही जाना पड़ेगा, फिर पछताने से कुछ नहीं मिलने वाला! जैसे नदी में डूबने वाला, कभी नीचे और कभी ऊपर गोते खाता रहता है, ऐसे ही जन्म-मरण के गोते खाने पड़ेंगे। संत तुलसीदास जी कहते हैं-

जिन्ह हरिकथा सुनी नहिं काना।
श्रवन रंथ अहिभवन समाना॥।
नयनन्हि संत दरस नहीं देखा।
लोचन मोर पंख कर लेखा॥।
ते सिर कटु तुंबरि समतूला।
जे न नमत हरि गुरु पद मूला॥।
जो न करहि राम गुन गाना।
जीह सो दादुर जीह समाना॥।

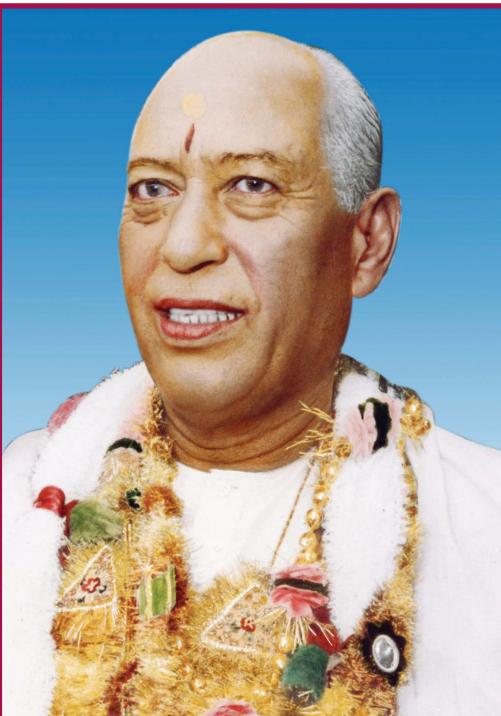
जिसने मनुष्य तन पाकर इन कानों से हरि की कथा या चर्चा नहीं सुनी, उसके कान सर्पों के बिल के समान हैं, जिसने

इन नेत्रों से सन्तों का दर्शन नहीं किया, उसकी आँखें मोर पंख के समान हैं, जो सिर श्री सद्गुरु और परमात्मा के चरणों

और कहा- भगवान! रुखी रोटी से तुम्हारा गला छिल जायेगा, लाओ! रोटियों को चुपड़ दूँ। एकान्त देखकर भगवान ने नामदेव जी को दर्शन दिये, इस पर भी नामदेव जी से कहा- नामदेव! तुम गुरु की शरण में जाओ, तभी तुमको ज्ञान होगा। नामदेव ने भगवान की आज्ञा मानकर गुरु की शरण लेकर ज्ञान की प्राप्ति की तथा जीवन के परम ध्येय को हासिल किया।

आज कोई कान फाढ़ने में, जटा बढ़ाने में, भगवां रंगाने में अथवा दण्ड धारण करने में, कोई गीता-मन्दिर, शिवालय बनवाने में, कोई तीर्थों पर जाकर नहाने में, कोई माला फेरने में, दान देने और पूजा-पाठ करने में कल्याण समझते हैं, पर कल्याण इन बातों से नहीं होगा।

हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और सिक्ख आदि सभी एक परमात्मा के बनाये हुए हैं। किसी से पूछो तो सभी यही कहेंगे कि हमारा बनाने वाला मालिक एक ही परमात्मा या खुदा है। जब सबका स्वामी एक है, तो उसका नाम भी सबके लिए एक है, परन्तु आज संसार सच्चे नाम को भूलकर ही एक-दूसरे से लड़ रहा है। इन सभी नामों को तो एक बच्चा भी दो या तीन साल का होने पर कहना सीख जाता है। क्या जब हम राम, कृष्ण, ऊँ, खुदा, अल्लाह या गॉड कहना नहीं सीखे, तो उस समय हमारे लिए, भगवान था ही नहीं? आखिर माता के गर्भ में जपने वाले नाम को भी जपना चाहिए, जिसके लिए सब संत-महात्मा कहते हैं कि वह नाम सोलह स्वर, छत्तीस व्यंजनों से परे है। वह नाम चाहे कोई जाने या न जाने, परन्तु वह नाम सबके हृदय में है। उस ज्ञान को गुरु



के बिना जान भी नहीं सकते।

तन्त्र मन्त्र सब झूठ है,
मत भरमो संसार।
सार शब्द जाने बिना,
कोई न उतरसी पार॥
शब्द बिना सुरति आन्धरी,
कहो कहाँ को जाय।
द्वार न पावे शब्द का,
फिर फिर भटका खाय॥

संत कबीरदास जी कहते हैं कि यदि तुम्हें अपने तंत्र-मंत्रों पर अभिमान है, तो तुम ही बताओ कि इनको जपते हुए तुम्हारी सुरति (ख्याल) कहाँ रहती है। जब मन टिकता ही नहीं, तो फिर सुमिरण या भक्ति भी नहीं हो सकती है। ये सब तंत्र-मन्त्र झूठे हैं, मानो या न मानो। इसमें किसी की बुद्धि या चतुराई नहीं चल सकती। पढ़-लिखकर शब्दों के जाल में दुनिया को फँसा सकते हैं, परन्तु मन इन बातों के भ्रम में नहीं फँस सकता। जैसे हाथी अंकुश से काबू में आता है, ऐसे ही मन या सुरति अन्दर के शब्द से काबू में आती है।

ओंकार निश्चय भया,
सो कर्ता मत जान।
साँचा शब्द गुरुदेव का,
पर्दे में पहचान॥

गुरु महाराज जी का वह शब्द पर्दे में जाना जाता है। कई आदमी सबके सामने पूछते हैं और कहते हैं कि हमें वह शब्द या नाम क्यों नहीं बताते? परन्तु वह नाम तो हृदय में है, बाहर कैसे बताया जाए। भगवान सत्-चित्-आनन्दस्वरूप (सच्चिदानन्दस्वरूप) हैं, तो उनका नाम भी सत्-चित् तथा आनन्द को देने वाला है। जब इन नामों से आनन्द की प्राप्ति नहीं होती, तो यह आनन्दायक हैं भी नहीं।

जासु नाम सुमिरत इक बारा।
नर उतरहिं भव सिन्धु अपारा॥

संत तुलसीदास जी कहते हैं कि उस नाम को एक बार स्मरण करके जीव भवसागर से पार हो जाता है। इन नामों को तो सारी दुनिया गा रही है, क्या इनसे कभी किसी का भला हो पायेगा? संत कहते हैं-

सुमिरण सुरत लगाय के,
मुख ते कछु न बोल।
बाहर के पट बंद कर,
अन्तर के पट खोल॥

वास्तव में न गुरु के बिना सत्यता का ज्ञान होता है और न ही गुरु के बिना मोक्ष

मनुष्य जीवन परमात्मा को पाने के लिए मिला है। परमात्मा लिखने-पढ़ने या विद्याचातुरी से नहीं मिलते। भगवान तो भक्ति और भाव के भूखे हैं। भगवान नीच-ऊँच को नहीं देखते, वह तो भक्त के हृदय की भावना को देखते हैं कि इसके हृदय में कितनी जगह है।

मिलता है। गुरु नानकदेव जी ने कहा है-

बलिहारी गुरु आपने,
देवाड़ी सत् बार।

जिन मानुस से देवता कियो,
करत न लगी बार।

जे सौ चन्दा उगवें,
सूरज चड़इं हजार।

ऐता चान्दन हाँदियाँ
गुरु बिन घोर अन्धार॥

संत कबीरदास जी भी कहते हैं-

गगन मण्डल के बीच में,
तहाँ झ़िलके नूर।

निगुरा महल न पाइयाँ,
पहुँचेगा गुरु पूरा॥

देखो, झूठी बातों में लगने से भला नहीं होगा। इसलिए सच्चे गुरु की शरण जाकर अन्दर के सच्चे प्रकाश और अमृत नाम को प्राप्त करो और तन-मन-धन से गुरु की सेवा करके उनकी आत्मा को प्रसन्न करके अपने परलोक को सुधारो।

इस संसार में सिकन्दर जैसे भी खाली चले गये, जिसने अनेक बादशाहों का खजाना जमा कर लिया था। फिर तुम ही क्या ले जा सकोगे। बिना भक्ति और सेवा के हीरे जैसे मनुष्य जन्म को व्यर्थ मत गंवाओ। परमात्मा का भजन करके इसको सार्थक करो। संत कबीरदास जी कहते हैं कि हे जीव! तूने भगवान के भजन के बिना हीरे जैसा अमूल्य जन्म व्यर्थ ही गँवा दिया। जीव माया में फँसकर मनुष्य शरीर की कदर को भूल जाता है, न तो संतों की शरण में जाकर सच्चा कल्याण करने वाली भक्ति को पूछता है और न कभी मन में हरिनाम-सुमिरण करने का विचार करता है। बैल की तरह दिन-रात माया को पाने के लिए जुटा रहता है।

मनुष्य भगवान को भूलकर संसार को रिझाने में समय को गँवा देता है। यह संसार सेमल के पेड़ की तरह बताया है। सेमल के फूलों की सुन्दरता को देखकर तोता इस आस से डाली पर आ बैठता है कि यह फल पकने पर खाऊँगा, परन्तु जब सेमल के डोडे को चोंच मारकर देखता है, तो उसमें से रुई निकलने पर सिर धुन-धुनकर पछताता है। इसी प्रकार जीवरूपी सुआ संसाररूपी वृक्ष पर बैठकर विषयरूपी फलों में सुख-शान्ति की इच्छा करता रहता है। जब विषयों में दुःख-ही-दुःख मिलता है, तो पछताता और रोता है, परन्तु-

आछे दिन पाछे गये,
हरि से किया न हेत।

अब पछताये होत क्या,
जब चिड़िया चुग गयी खेत।

खेत को जब पक्षियों ने चुग लिया तो रखवाली करने से या पछताने से लाभ ही क्या? जब मनुष्य शरीर भजन के बिना बिता दिया, तो अफसोस करने या पछताने से गयी हुई आयु वापस लौटकर तो नहीं आती। अच्छा तो यह है कि जो

जीवन शेष रह गया है, उसी को परमात्मा की याद में लगायें। यदि शेष आयु को भी पिछले समय को याद करके गँवायेगा तो कोई बुद्धिमानी नहीं है। संत कबीरदास जी का कहना है कि संसार एक दुकान है, जिसमें सभी लोग माल खरीदने और बेचने को आये हैं। जिसने परमात्मा का भजन किया है, उसने तो अपना माल चौगुना कर लिया, परन्तु जो संसार के नाशवान पदार्थों को पाने की इच्छा करता है, उसने पूँजी को अर्थात् मनुष्य जन्म को गँवाया ही है।

गीता में भगवान ने योद्धा शब्द की व्याख्या की है कि किसी काम के करने की चतुरता को योद्धा कहते हैं और गुरु महाराज जी उस योद्धा को जानते हैं। जो गुरु के इशारे को समझ लेता है, वह तत्काल मोह-बन्धन से मुक्त हो जाता है। जैसे- एक पनवाड़ी ने एक तोता पाल रखा था। जिसका पिंजरा दुकान के आगे लटका रहता था। एक गुरुमुख उस पनवाड़ी की दुकान से होता हुआ गुरु-दर्शन को जा रहा था। उस समय पनवाड़ी कहीं गया हुआ था। तोते ने गुरुमुख से पूछा- तुम कहाँ जा रहे हो? शिष्य ने उत्तर दिया- भाई तोते! मैं गुरु-दर्शनों को जा रहा हूँ। तोते ने पूछा- गुरु महाराज क्या करते हैं? शिष्य ने कहा- गुरु महाराज बन्दी-छोड़ होते हैं। वे जीव को सब बन्धनों से मुक्त कर देते हैं। तोते ने कहा- जब ऐसी बात है, तो गुरु महाराज जी से पूछकर आना कि मैं इस लोहे के पिंजरे से कैसे छूट सकता हूँ।

शिष्य पनवाड़ी की दुकान से चलकर श्री गुरु महाराज जी के चरणों में पहुंचा। फूल-प्रसाद जो कुछ लाया था, भेंट किया, दण्डवत प्रणाम किया और आज्ञा लेकर बैठ गया। सत्संग श्रवण करने के बाद अच्छा मौका देखकर वह शिष्य गुरु महाराज जी से कहने लगा कि महाराज जी! जब मैं दर्शनों के लिए आ रहा था,

तो रास्ते में पनवाड़ी की दुकान पर एक तोता मिला। उस तोते ने मुझसे पूछा कि तुम कहाँ जा रहे हो? मैंने उत्तर दिया- गुरु महाराज के पास जा रहा हूँ। उसने पूछा- गुरु महाराज क्या करते हैं? मैंने कहा कि गुरु महाराज बन्दी-छोड़ होते हैं। तब तोते ने कहा- मेरे लिए भी कोई उपाय पूछकर आना कि मैं इस लोहे के पिंजरे से कैसे छूट सकता हूँ।

इतना सुनते ही गुरु महाराज जी धड़ाम से पृथ्वी पर गिर पड़े और स्वाँस चढ़ाकर बेहोश हो गये। शिष्य ने गुरु

॥४४॥

सच्चे गुरु की शरण जाकर अन्दर के सच्चे प्रकाश और अमृत नाम को प्राप्त करो और तन-मन-धन से गुरु की सेवा करके उनकी आत्मा को प्रसन्न करके अपने परलोक को सुधारो।

॥४५॥

महाराज जी को हिलाया-डुलाया, सिर दबाया, परन्तु गुरु महाराज जी नहीं उठे। शिष्य बड़ा दुःखी हो रहा था और सोचता था कि तोते की बात में न जाने क्या जादू था, जो गुरु महाराज जी एकदम बेहोश हो गये। दो-तीन घंटे तक गुरु महाराज उसी हालत में पड़े रहे। फिर जब गुरु महाराज उठ बैठे, तो शिष्य ने तोते की बात का दोबारा जिक्र ही नहीं किया।

शिष्य कुछ दिन तक दर्शन, सत्संग और सेवा का लाभ उठाता रहा। फिर गुरु-आज्ञा लेकर अपने घर को जाने लगा। गुरु महाराज जी ने प्रसाद दिया और शिष्य दण्डवत करके चल पड़ा। रास्ते में पनवाड़ी की दुकान पड़ी, संयोग से उस समय भी पनवाड़ी कहीं बाजार गया हुआ था। तोते ने शिष्य से कहा- दर्शन कर आये और क्या मेरी बात को भी गुरु महाराज जी से पूछा था? गुरुमुख ने कहा- भाई तोते! तू अपनी बात को मत पूछ! न जाने तेरी बात में क्या जादू था कि

जब मैंने तुम्हारी बात को गुरु महाराज जी से कहा, तो गुरु महाराज जी सुनते ही मुर्दे से होकर गिर गये। उन्हें कई घंटों में होश आया। मैंने तो फिर तुम्हारी बात का जिक्र ही नहीं किया कि कहीं गुरु महाराज जी की वही हालत फिर न हो जाय।

गुरुमुख तो अपने घर चला गया, परन्तु गुरु के इशारे को तोता समझ गया। जब पनवाड़ी दूर से आता दिखायी दिया, तो तोता मृतक होकर पिंजरे में गिर गया। पनवाड़ी ने आकर तोते को मुर्दा समझकर पिंजड़े की खिड़की खोली।

तोते को बाहर निकाला और हाथ पर रखकर इधर-उधर टटोल कर देखने लगा। पनवाड़ी सोचने लगा कि हाय! तोता कैसे मर गया। इधर तोते ने मौका देखकर पंख फैलाये और उड़ गया। पनवाड़ी हवका-बक्का होकर देखता रह गया।

इसी प्रकार जो गुरु की उनके इशारे को समझ जाता है उसकी सहज में ही मुक्ति हो जाती है। गुरु का इशारा है कि अपनी हस्ती को मिटा दो। जो सब प्रकार के अभिमान को खत्म करेगा, वही संसार के बन्धनों से छुटकारा पायेगा। संसार के पदार्थों में अहंकार करके किसी ने भी कुछ नहीं पाया।

**सुमिरण बिन गोता खावेगा।
क्या लेकर तू आया जगत में,
क्या लेकर तू जावेगा।
बिन सतनाम के नर्क पड़ेगा,
फिर चौरासी जावेगा।**

विचार करो कि तुम इस संसार में माता के गर्भ से क्या लेकर आये थे और मरती बार संसार की कौन-सी चीज लेकर जाओगे। बिन अमृत नाम के स्मरण किये, तो चौरासी ही जाना पड़ेगा, फिर पछताने से क्या बनेगा। जैसे नदी में डूबने वाला कभी नीचे और कभी ऊपर गौते खाता रहता है, ऐसे ही जन्म-मरण के गौते खाने पड़ेंगे।

मनुवां तो दसों दिसि फिरे, यह तो सुमिरण नाहिं

श्री भोले जी महाराज

प्रे मी सज्जनों! आप लोग काफी समय से सत्संग सुन रहे हैं। जब मनुष्य पर भगवान की असीम कृपा होती है, तब उसे सत्संग की प्राप्ति होती है। रामचरित मानस में भी कहा है-

बड़े भाग पाइब सत्संगा।

बिनहिं प्रयास होहिं भव भंगा॥

सत्संग मनुष्य को बड़े भाग से मिलता है। जब हम कोई अच्छा कार्य करना चाहते हैं, तो देवता और प्रकृति सभी उसमें सहयोग करते हैं। आज इन्द्र देवता ने भी कृपा की है कि बरसात नहीं हो रही। यदि आज बारिश होती, तो यहां पर सत्संग नहीं हो पाता। वास्तव में प्रकृति भी सत्संग में मदद करती है। प्रकृति चाहती है कि मनुष्य अच्छे रास्ते पर चले और शुभ काम करे।

जब जीव मां के गर्भ में रहता है, तो भगवान से प्रार्थना करता है कि हे भगवान! हमें इस काल कोठरी से बाहर निकालो। बाहर जाकर हम तेरे नाम का सुमिरण करेंगे, लेकिन यहां आकर वह दुनिया की मोह-माया में फंसकर भगवान के नाम सुमिरण को भूल जाता है। संत-महापुरुष सत्संग के माध्यम से मनुष्य को भगवान से किये गये उस वायदे की याद दिलाते हैं, जो मां के गर्भ में उसने भगवान से किया था। भजन में कहा है-

**जप ले हरि का नाम जप ले,
तेरी उमर रही अब थोड़ी।**

धीरे-धीरे उम्र समाप्त हो रही है। इसलिए गुरु महाराज जी से भगवान के सच्चे नाम को जानकर उसका सुमिरण करो। प्रभु के नाम को जाने बिना हम संसार में व्यर्थ जीवन गंवा रहे हैं। खाना, पीना, सोना, भय और बच्चे उत्पन्न करना आदि क्रियाएं तो पशु-पक्षी भी करते हैं, लेकिन मनुष्य योनि को सर्वश्रेष्ठ इसलिए कहा गया कि मनुष्य सांसारिक भोगों का उपभोग करने के साथ-साथ भगवान के



नाम को जानकर उसका भजन-सुमिरण भी कर सकता है। पशु-पक्षी केवल सांसारिक वस्तुओं का उपभोग तो कर सकते हैं, लेकिन भगवान का भजन नहीं कर सकते। संत ब्रह्मानंद जी कहते हैं-

**घट ही में उजियारा साधो,
घट ही में उजियारा रे।**

भगवान की शक्ति तो हमारे घट के अन्दर है, लेकिन अज्ञानता के कारण हम उसको बाहर ढूँढ रहे हैं।

रामकृष्ण परमहंस जी अपने शिष्यों से कहते हैं कि मुझे खुशी होती है कि जब एक बच्चा मंदिर जाता है, क्योंकि वहां जाकर वह कुछ ज्ञान के बारे में पूछेगा। लेकिन उस समय दुःख होता है, जब एक बूढ़ा व्यक्ति भी मंदिर में जाता है, क्योंकि वह जीवन पर्यन्त मंदिर में जाता रहा, लेकिन उसने प्रभु के सच्चे नाम को नहीं जाना।

प्रभु का नाम तो हमारे घट में है, जिसका ज्ञान सद्गुरु महाराज देते हैं। हमारे ये स्वांस बहुत कीमती हैं। जब मनुष्य के स्वांस निकल जाते हैं, तो कहते हैं कि भाई! यह आदमी मर गया, अब हम कुछ नहीं कर सकते। इसलिए जीवित रहते हुए स्वांसों में जो प्रभु का नाम रम रहा है, उसे जानें! सांसों के बिना हम

सभी मुर्दा कहलायेंगे। मरने के बाद हमारे सभी साथी यहीं छूट जायेंगे। इसलिए स्वांसों को जानने की कोशिश करो। संत कबीरदास जी ने कहा है-

**माला तो कर में फिरे,
जीभ फिरे मुख माहिं।
मनुवां तो दसों दिसि फिरे,
यह तो सुमिरन नाहिं।**

हम हाथ से तो माला को फेर रहे हैं, पर हमारा मन काबू में नहीं है। मन तो संसार में भटक रहा है, इसको सुमिरण करना नहीं कहते हैं। जब सच्चे नाम का हम सुमिरण करेंगे, तभी मन वश में होगा। भगवान श्रीकृष्ण से अर्जुन कहता है कि भगवान! यह मन बहुत चंचल है, मैं इस चंचल मन को काबू नहीं कर सकता। तब भगवान उसे आत्मज्ञान का क्रियात्मक बोध कराते हैं। जब अर्जुन आत्मज्ञान को जान जाता है, तब वह कहता है- भगवन! आप तो गुरुओं के भी गुरु हैं। ज्ञान का अनुभव करने के बाद ही अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण को जाना। हमारे धर्मशास्त्रों में आत्मज्ञान को सबसे ऊँचा बताया है। आत्मज्ञान की जानकर हमें भगवान के नाम का भजन-सुमिरण करना है। आत्मज्ञान को केवल हम इसी मनुष्य शरीर में जान सकते हैं।

गुरु दरबार की सेवा बड़े भाग्य से मिलती है

माताश्री राजेश्वरी देवी

प्रेमी सज्जनों! एक प्रसंग आता है कि एक राजा था। उसके चार पुत्र थे और वे चारों राजकुमार राजदरबार में खेल रहे हैं। वे चारों बहुत सुन्दर कपड़े पहने हुए हैं, उनके सब नौकर-चाकर और दास-दासियाँ उनको खिला रही हैं। राजा उनकी क्रीड़ा देख रहे हैं और हँस रहे हैं। इतने में नारद जी आ जाते हैं, जिन्होंने उस राजा को बताया था कि भगवान विष्णु ने कहा है कि तुम्हारे भाग्य में संतान नहीं है। नारद जी बच्चों को खेलते हुए देखते हैं, बच्चों के पीछे नौकर-चाकर धूम रहे हैं, राजा-रानी देख रहे हैं और खुशी से हँस रहे हैं, तो नारद जी ने कहा कि ये चार पुत्र किसके हैं? राजा ने कहा कि महाराज यह सब आपके आशीर्वाद का फल है। अब देख लीजिये! नारद जी कितने बड़े भक्त थे, जो स्वयं शरीर से ही भगवान विष्णु के पास जाते हैं। जैसे आज महाराज जी के आगे-पीछे रहने वाले लोग अपने को बड़ा भारी अभिमानी समझते हैं, भक्त समझते हैं और जब उनकी करनी को देखो, तो जीरो बटा जीरो। मैं सत्य कहती हूँ कि उनके अन्दर कितना कपट, उनके अंदर कितना छल भरा होता है।

देखो, जब महान् शक्तियाँ अनीति से काम करती हैं, तो क्या होता है? इन्द्र का आसन जब नृग राजा ने ले लिया, तो इन्द्र तो भाग गया अपनी पदवी से। यह शास्त्रों का प्रमाण है, मैं गलत नहीं कहती हूँ। राजा इन्द्राणी पर मोहित हो गया। बड़ा धर्मात्मा राजा था, लेकिन जब मोहित हो गया तो इन्द्राणी ने कहा कि तू मेरी सत्यता को मत नष्ट कर, मैं तो इन्द्र

की रानी हूँ। राजा ने कहा, इन्द्र के राज्य के अन्दर जो भी वस्तुएं हैं, वे सब मेरी हैं। तब इन्द्राणी पति के पास जाती है और कहती है कि मैं अब क्या करूँ, मैं किसके पास जाऊँ। मेरी रक्षा करो! मैं किससे भीख माँगूँ। तो इन्द्र ने कहा- देख तू राजा के पास जा और उससे कहना कि ऋषियों के कंधे पर पालकी में बैठकर आ।

तो देखो, अगस्त्य जैसा मुनि जिन्होंने एक ही आचमन से सारे समुद्र को सुखा दिया था, ऐसा शास्त्रों का प्रमाण है, उन जैसे ऋषियों को राजा ने पालकी में जोत दिया। अगस्त्य मुनि ने जब उसको एक ताना मारा, तो उसने अगस्त्य को अपने पैर से एक लात मारी और वह राजा एकदम अपनी पदवी से, अपनी शक्ति से नीचे गिर गया। जब तुम्हारी आंखों में पीलिया पड़ जाता है, तो तुम्हें सारा संसार ही पीला नजर आता है। तुम गलत लोगों की शिक्षाओं में मत जाओ। हम तो तुमको बचाना चाहते हैं। आज अगर गुरु माँ का आदर, भाई का आदर और भगवान का आदर करना छोड़ देंगे,



तो महान पुरुषों को कौन मानेगा? गुरु की मर्यादा तो भगवान ने रखी है और भगवान की मर्यादा को गुरु ने रखा है। हम तो मर्यादा के लिए तुले हैं, सच्चाई के लिये तुले हैं। हम विदेश में गये, लेकिन हमने तो अपनी संस्कृति और अपनी शिक्षा उनको दी, उनकी संस्कृति को हमने नहीं अपनाया। जो व्यक्ति परिवार को मर्यादा से अलग करने की सोचेगा, उसी के घर में काल आयेगा। तुम हमारे भक्त हो, हमने भी तुमको प्रेम दिया है और तुमने भी हमको प्यार दिया है। हम तुमको मुसीबत में नहीं डालना चाहते, हम तो तुम्हारी रक्षा करना चाहते हैं।

तो वही नारद जी विष्णु भगवान पर बहुत नाराज हो गये और कहने लगे

कि आप तो कपटी हैं। भगवान्, स्वयं शक्तिवान् है और मुझसे झूठ बुलवा देते हैं, हमारा अपमान करा देते हैं। तुम्हारे दरबार में न्याय नहीं है। स्वयं तो महान् शक्ति हो और हम जैसों को झूठा बना देते हो। एक फक्कड़ के द्वारा चार बेटे पैदा कर दिये और मैं इतना बड़ा सारे वेदों का ज्ञाता, मेरा अपमान करा दिया।

देखो, मैं कभी अन्याय का पक्ष नहीं लूँगी। चाहे वह मेरे पुत्र हों, चाहे कोई शिष्य हों। इस दरबार में लोग सच्चाई का पाठ सीखने के लिए आते हैं, इसलिए मैं सच्चाई को सामने रखूँगी। गुरु महाराज जी की कृपा जब मनुष्य से हट जाती है, महापुरुष की कृपा जब हट जाती है तो वह मनुष्य मिट्टी का पुतला जैसा बन जाता है। नारद जी ने भगवान्

विष्णु के लिए बहुत कटु शब्द कहे, मगर भगवान् चुप ही रहे। कुछ दिन के बाद भगवान् ने एक दिन नारद से कहा कि नारद मेरे पेट में बड़ा भारी दर्द है और इतना दर्द है कि मेरे प्राण निकल रहे हैं। तब नारद जी ने कहा कि महाराज कैसे आपके प्राण बचेंगे, वही उपाय कहिये, मैं करूँगा। भगवान् ने कहा कि मुझे मनुष्य का कलेजा चाहिए। यदि कोई मनुष्य अपना कलेजा काटकर के दे दे, तो मैं ठीक हो जाऊँगा, अब नारद जी एक छुरा और कटोरा लेकर सारे ब्रह्माण्ड में, सारे मृत्युलोक में घूमते हैं और कहते हैं कि अरे, तुम भगवान् के भक्त हो, भगवान् के पेट में बड़ा भारी दर्द है, भगवान् को मनुष्य के कलेजा की जरूरत है, क्यों नहीं देते हो, यह मनुष्य तन तो एक दिन समाप्त हो जायेगा। नारद जी, बड़ा-बड़ा लेक्चर दे रहे हैं, पर अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए दे रहे हैं। तब वही फक्कड़ भक्त आता है और

उसने सुना कि भगवान् विष्णु के पेट में दर्द है और उन्हें कलेजे की जरूरत है, तो जैसे ही उसने नारद के हाथ से छुरा लिया और काटने के लिए चला, तो झट भगवान् ने आकर उसका हाथ पकड़ लिया। भगवान् विष्णु ने कहा- हे नारद, ऐसे भक्तों के लिए मुझे सब प्रणों को, अपने वचनों को तोड़ना पड़ता है। यह भक्त जो है मेरा, इस तरह से मुझे बाध्य कर देता है। भगवान् विष्णु ने कहा कि

॥४४॥

इस दरबार में लोग सच्चाई का पाठ सीखने के लिए आते हैं, इसलिए मैं सच्चाई को सामने रखूँगी। गुरु महाराज जी की कृपा जब मनुष्य से हट जाती है, महापुरुष की कृपा जब हट जाती है तो वह मनुष्य मिट्टी का पुतला जैसा बन जाता है।

॥४५॥

नारद, कलेजा तो तुम्हारे पास भी था, तुम्हें सब जगह भ्रमण करने की क्या जरूरत थी, तुम भी तो अपना कलेजा काटकर दे सकते थे, तुम भी तो भक्तों में ही शामिल थे। पर देख, इन जैसे भक्तों के लिए ही मैं संसार में आता हूँ और इन्हीं की मैं रक्षा करता हूँ। जो अपना कलेजा देने के लिए तैयार है, उसको अपने शरीर की तनिक भी परवाह नहीं, तो ऐसे भक्तों के वचन सत्य नहीं होंगे, तो किसके वचन सत्य होंगे। भगवान् ने कहा कि नारद इसमें मेरा दोष नहीं है। इन भक्तों के अंदर इतनी बड़ी शक्ति छिपी है कि ये स्वयं मेरे प्राणों को, वचनों को तुड़वा देते हैं।

जिसका हृदय सच्चा होता है, वह सभी को अच्छी शिक्षा देता है। महापुरुष मर्यादा का उलंघन नहीं करते हैं। ये शास्त्र हैं, देख लीजिये। माँ की गोद में किस-किस तरह से जन्म लेकर महापुरुषों ने इस जगत का उद्घार किया

है। यह तो सच्चा दरबार है, यहाँ तो न्याय ही होता है, दूध का दूध और पानी का पानी। जिसे घर जाना है, जाओ विविता से जीवन बिताओ, फिर देखो कितनी शान्ति मिलती है। शान्ति कहीं बाहर नहीं है, शान्ति को ऋषियों ने हृदय के ही अन्दर बताया। देखो, तुम कितने भाग्यशाली हो कि प्रचार करने की सेवा मिल गई, ज्ञान देने की सेवा मिल गई, स्वयंसेवकों की तुम्हें सेवा मिल गई। ये जीवन न जाने किस समय छूटेगा। तो हर समय सेवक को सेवा में तैयार रहना चाहिए और यदि हम सेवा नहीं करेंगे, तो गुरु दरबार में हमें सेवा का पाठ कौन सिखायेगा? हर समय हमें एक सिपाही की तरह तैयार रहना चाहिए। अपने पास का धन ही तो काम आता है और तिजोरी का धन तो ऐसे ही पड़ा रह जाता है। किसी के आने और जाने से गुरु दरबार की सेवा पर कोई फर्क नहीं पड़ता। यदि कोई कहे कि मैं दरबार में नहीं रहूँगा, तो यह दरबार नहीं चलेगा, ऐसी बात नहीं। दरबार तो हमेशा चलता रहेगा, उसका तो काम ही है चलना। पर तुम भक्तों की शोभा तो भजन और सुमिरण से ही है। तुम्हारे मुखारविन्द से हमेशा अच्छी बात निकलनी चाहिए।

भारत को विश्वगुरु कहा गया, क्योंकि यहाँ की संस्कृति महान् है, विदेश की संस्कृति ठीक नहीं है। भारत की संस्कृति में पवित्रता ही पवित्रता है। परिवार कैसा होता है, माँ कैसी होती है, बाप कैसा होता है, भाई कैसा होता है, रिश्तेदार कैसा होता है, हर तरह की शिक्षा हमारे देश में दी जाती है, बच्चों में अच्छे संस्कार डाले जाते हैं और उन्हें मर्यादा में रहना सिखाया जाता है। दूसरे देशों में ऐसा नहीं होता। वहाँ तो सब

भेड़चाल है, चलो भाई, चलो। वहां कोई मर्यादा नहीं, बड़े-छोटे का कोई सम्मान नहीं। इसलिये धन होते हुए भी वे दुखी हैं और उनको मानसिक शांति नहीं है। हम भारत के लोग गरीबी में भी मस्त हैं। चाहे हम फटे कपड़े पहनें, पुराने पहनें, निर्धन रहें, पर उस निर्धनता में भी हमारे अन्दर पवित्रता है, हमारे अंदर सुख-शांति और आनंद है।

जब मनुष्य को संतों का सानिध्य और सत्संग मिलता है, तो उसके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आ जाता है। अंगुलिमाल के बारे में आता है कि वह बहुत ही हिंसक प्रवृत्ति का व्यक्ति था। लोगों को मारकर उनकी उंगली काट लेता था और उन उंगलियों की माला बनाकर अपने गले में पहनता था। एक बार भगवान बुद्ध जंगल के रास्ते से कहीं जा रहे थे। रास्ते में उनको अंगुलिमाल मिला और वह भगवान

बुद्ध को देखकर बहुत खुश हुआ कि यह बड़ा खूबसूरत व्यक्ति मेरे सामने आ गया। अब मैं इसकी उंगली काटूंगा और उससे अपना हार बनाऊंगा। बुद्ध उससे पूछते हैं कि अंगुलिमाल, तू ऐसा काम क्यों करता है? जब तूने मनुष्य को बनाया ही नहीं, तो फिर तू मनुष्य की उंगलियों को क्यों काटता है? अंगुलिमाल कहता है कि नहीं, मैं इन विचारों को नहीं मानता हूं। जैसे बहुत से हठधर्मी लोग होते हैं, वे कहते हैं कि भगवान नाम की कोई चीज नहीं है। जैसे कि उनके सांसों को उनके माता-पिता ने वसीयत में दिया हो। परंतु नहीं, उन सांसों को देने वाले माता-पिता नहीं बल्कि कोई और है।

अंगुलिमाल पहले तो बोला कि मैं इन बातों को नहीं मानता हूं, परंतु जब

बुद्ध ने उसको समझाया, तो अंगुलिमाल भी उनका शिष्य और भिक्षुक बन गया। इसी तरह रत्नाकर के बारे में आता है कि वह डाकू था। उसको जब नारद मिलते हैं, तो वह कहता है कि आहा! आज मैं तुझे मारूँगा। तब नारद जी उससे कहते हैं कि देख! तू मुझे बाद में मारना, पहले अपने परिवार के लोगों से पूछकर आ कि मैं जो पाप करके लाता हूं, जो चोरी करके लाता हूं, क्या उस पाप के भागीदार तुम भी बनोगे? उसने अपने

तुम कितने भाग्यशाली हो कि प्रचार करने की सेवा मिल गई, ज्ञान देने की सेवा मिल गई, स्वयंसेवकों की तुम्हें सेवा मिल गई। ये जीवन न जाने किस समय छूटेगा। तो हर समय सेवक को सेवा में तैयार रहना चाहिए और यदि हम सेवा नहीं करेंगे, तो गुरु दरबार में हमें सेवा का पाठ कौन सिखायेगा?

घर जाकर परिवारजनों से, पत्नी से और माता-पिता से पूछा, तो उन सबने कहा कि नहीं, हम तुम्हारे इस पाप के भागीदार नहीं बनेंगे। यदि तुम्हारी उंगली अग्नि में डालें, तो तुमको ही दर्द होगा। आदमी जैसा कर्म करेगा, उसे उसका वैसा ही फल मिलेगा। हमें तो पता ही नहीं कि तू पाप की कमाई लाता है। इसलिए हम भागीदार नहीं बनेंगे। जो जैसा कर्म करेगा, वह उसका वैसा ही फल पायेगा। नारद जी का सत्संग सुनकर रत्नाकर का मन बदल गया। रत्नाकर ने नारद जी के पैरों में गिरकर क्षमा मांगी तथा उनसे आत्मज्ञान को जानकर अपने जीवन को धन्य किया।

देखो, प्रह्लाद को जब उसका पिता लाल तपते खम्भ के साथ बाँधना चाहता था, उसी समय नरसिंह भगवान खम्भ

फाड़कर आ जाते हैं, क्योंकि प्रह्लाद भगवान को याद करता है- हे प्रभु! तू ही मेरा सब कुछ है। भगवान! मेरा पिता मुझे मारना चाहता है, मेरे प्राणों की रक्षा करो! तभी कहा है-

**जो दिल से मेरा नाम गाता रहेगा,
तो मुझको भी वह याद आता रहेगा।**

जो भगवान की याद करेगा, उसकी जरूर रक्षा होगी। चिन्ता तो भगवान की, उसके नाम की करनी चाहिए। देखो, हम उस परिवार से चले जाते हैं, परिवार तब भी चलता है, इस चिन्ता को तो हम अपने लिए फाँसी बना लेते हैं, इन्हीं चिन्ताओं के अन्दर शरीर को छोड़कर चले जाते हैं, यही चिन्ता हमें बाँध लेती है।

बार-बार मरना, बार-बार जन्म लेना, बार-बार माता की जठाराग्नि में, जानवरों की जठाराग्नि में ये आत्मा दुःख पाती है। इसलिए कहते हैं कि यह मनुष्य शरीर मोक्ष का दरवाजा है और जो आत्मा इस मोक्ष से वंचित रह जाती है, खाली चली जाती है, वह आत्मा फिर बार-बार जन्म लेती है, बार-बार दुःख पाती है। इसलिए यह जो मनुष्य शरीर है, यह बड़ा महान् है। यही मोक्ष का दरवाजा बताया। जो इस दरवाजे पर अपने जीवन का कल्याण करते हैं, उन्हीं को महान् कहते हैं। यह मनुष्य शरीर भगवान का भजन करने के लिए मिला है। इसलिए इसे सफल और सार्थक बनाना तुम्हारा काम है। गुरु महाराज की यही शिक्षा है, वे इसी आत्म जागृति के लिए नगर-नगर ज्ञान का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। तुम्हें भी इस मौके से चूकना नहीं है। तुम भी ज्ञान प्रचार में तन-मन-धन से महात्मा-बाई जी का सहयोग करो, यह दुनिया का सबसे महान् कार्य है।

ज्ञान अंजन सतगुरु दिया, अज्ञान अंधेर विनाश

माताश्री मंगला जी

प्रे मी सज्जनों! गुरु नानक देव जी कहते हैं-

ज्ञान अंजन सतगुरु दिया,
अज्ञान अंधेर विनाश।
हरि कृपा ते संत भेटिया,
नानक मन प्रकाश॥

आज यहाँ हजारों की संख्या में भक्त समाज आया है, सबके अंदर एक ही जिज्ञासा है कि हमें अध्यात्म को जानना है; कुछ जान गए हैं, कुछ जानेंगे। दिन-प्रतिदिन भक्त लोग बढ़ते जा रहे हैं, उनकी जिज्ञासा बढ़ती जा रही है और वह जिज्ञासा क्या है कि वह कौन-सा नाम है? जिसको हम जानकर के परमज्ञानी बन जाएंगे। सिर्फ उस नाम को जानने के बाद ही परमज्ञानी नहीं बनेंगे, जब उसका निरंतर नित्य-नियम से अभ्यास करेंगे, तब होगा।

करत करत अभ्यास के,
जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते,
सिल पर परत निशान॥

जब तक जानकर करेंगे नहीं, तब तक हमारे जीवन में बदलाव नहीं आ सकता है, शारीरिक बदलाव तो आता रहेगा, लेकिन मन में विचारों का बदलाव जो है बहुत मुश्किल से आता है; आपको समर्पित होना पड़ेगा उसके लिए, अपने मन को समर्पित करना पड़ेगा, जब तक हम मन को समर्पित नहीं करेंगे, हमें वो बात समझ नहीं आएगी। इसलिए मन को लगाकर भजन-सुमिरण करें, नाम सुमिरण का अभ्यास करें, तभी कुछ हाथ आएगा, अन्यथा खाली हाथ संसार से चले जाना है। संत कहते हैं कि-

आए हैं सो जायेंगे,
राजा रंक फकीर।
जाना तो सबने है, लेकिन आए



किसलिए थे? इस प्रश्न को पूछो, जो हमारे जीवन का लक्ष्य है। कई भक्त लोग आते हैं, बराबर अपना प्रयास करते रहते हैं और प्रयास जब करते हैं, तो प्रयास करते-करते उनको एक दिन आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति होती है। तब वे समझते हैं कि संसार में आना क्यों हुआ है? इसीलिए बार-बार सत्संग में बुलाया जाता है। किसी को बुलाया जाता है और कोई स्वयं आता है। जो स्वयं आता है, वह यही प्रार्थना करता है कि मेरा जीवन धन्य हो जाए; मैं कैसे अपने इस मानुष तन को धन्य करूँ!

आप जानते ही हैं कि नारद जी तो भगवान विष्णु के पास जाते थे। नारद जी के लिए तो द्वार खुला था विष्णुलोक का। जब वे जाते थे स्वर्ग में, तो उनके लिए अलग आसन दिया जाता है। एक दिन नारद जी को शंका हुई कि मेरे लिए अलग आसन लगता क्यों है; तो उन्होंने प्रश्न किया तो उन्हें बताया कि तुम अज्ञानी हो। वे सोचने लगे कि मैं तो सभी देवी-देवताओं के पास चला जाता हूँ, फिर मैं

कैसे अज्ञानी हूँ? खैर, जब नारद जी ने अध्यात्म को जाना, तब उन्हें पता चला कि सचमुच मैं इस अध्यात्म विद्या को नहीं जानता था, जिससे जीवन धन्य हो जाता है।

यह मन ही एक मंदिर है, यह शरीर ही हमें तीर्थ रूप मिला है। यह अध्यात्म की गंगा है, सत्संग से हमारे मन के विचार बदल जाते हैं, सत्संग हमारे हृदय में आत्म जिज्ञासा उत्पन्न करता है, सत्संग हमें सुमारा में लगाता है। हमें यह सोचने पर विवश करता है कि भक्ति में लगें और भक्ति ही सकल गुणों की खान है। अगर हम भक्ति मार्ग में लगते हैं, तो हम अपने जीवन को सार्थक बनाते हैं। रचनाकार जो परमात्मा है, उसने मनुष्य रूपी मूर्ति बनाकर के भेज दिया है; पर इसकी सांसों की कीमत तो हमें समझनी है कि हम क्या कर सकते हैं उसमें। इसलिए यह सत्संग एक माध्यम है। मनुष्य शरीर है तो इसमें चिंता भी रहेगी; लेकिन संतों ने कहा कि-

चिंता तो सतनाम की,
और न चितवे दास।

जो चिंता है नाम बिन, वही काल की फांस॥

जब तक इस शरीर में प्राण हैं, चिंता तो रहेगी; लेकिन चिंता से मुक्ति का एक ही रास्ता है जो हमें गुरु महाराज जी ने ज्ञान दिया है। इसीलिए उसे ज्ञान अन्जन कहा। जो आत्मा का ज्ञान है, वह अज्ञानता का विनाश करने वाला मंत्र है; वो हमारे ही अंदर है। भगवान शंकर ने कहा-

**महामंत्र जेहि जपत महेसू।
कासी मुकूति हेतु उपदेसू॥**

हम कितने भी लोटे भगवान के ऊपर हम गंगाजल चढ़ाएं, कितने भी बेलपत्र, फूल चढ़ाएं, वो हमारी आस्था है। पर स्वयं भगवान शंकर ने क्या कहा- वह कौन-सा ऐसा महामंत्र है जिसका भगवान शंकर भी जप करते हैं और काशी के निवासियों को मुक्ति के लिए उपदेश करते हैं? आप स्वयं भगवान शिव के चित्र देखेंगे, तो ध्यान में बैठे हुए हैं। प्रेमी सज्जनों, समय बहुत कम रह गया है। मैं देख रही थी, आज कोई 80 साल का है, कोई 70 साल का है, कोई 60 साल का है। हमारे साल में सत्संग के तीन कार्यक्रम होते हैं; सब प्रेमीभक्त आते हैं, सुनते हैं, चले जाते हैं; जब क्षेत्र में संत-महात्मा जाते हैं, तो आपकी बैटी चार्ज हो जाती है।

जब मीराबाई छोटी बच्ची थी, तो घर में मां के पास खड़ी थी, और घर के नीचे से बारात जा रही थी, तो बारात को देखकर मीरा कहती है- मां, ये क्या है? मां कहती है- बेटी, यह शादी हो रही है, यह बारात है। आज दूल्हा जा रहा है अपनी दुल्हन को लाने और तुम्हारी भी एक दिन शादी होगी; तो मीराबाई कहती है कि मेरा दूल्हा कौन होगा? ज़िद करने लगी, अब कई बार बच्चों की ज़िद होती है, तो ज़िद के सामने माता-पिता उन्हें टालने के लिए कुछ भी बोल देते हैं, वहाँ सामने भगवान कृष्ण की मूर्ति रखी थी, तो मां मूर्ति की

तरफ इशारा कर कहती है, यह है तेरा दूल्हा। मीराबाई ने उसी समय मन में गांठ बांध ली कि यही मेरा पति है और यह मेरा परमेश्वर है। वह कहती है कि पति परमेश्वर तो एक ही है, वह मगन होकर भजन गाती है कि-

लोकन के पिया परदेश बसत हैं,

लिख लिख भेजें पाती।

मेरे पिया मेरे हृदय बसत हैं,

कबहुँ ना आती जाती॥

मीराबाई का संदेश सुनिए, कितनी

करें, उसकी प्राप्ति करें; जब तक उसे हम प्राप्त नहीं करेंगे, उसका भजन-सुमिरण नहीं करेंगे, तब तक हमारा जीवन ऐसे ही व्यर्थ बीतता चला जाएगा, फिर चाहे राजा हो या रंक; सबको एक दिन संसार से जाना ही है। छोटी-सी पुड़िया भस्म में यह शरीर बदल जाता है। श्री महाराज जी एक भजन गाते थे, यह शरीर चला-चली का मेला है। इसीलिए अष्टावक्र जब दरबार में घुसे तो सब हंसने लगे उनके शरीर को देखकर। यह अष्टावक्र, आठ जगह से टेढ़े-मेढ़े शरीर वाला व्यक्ति राजा के प्रश्न का उत्तर कैसे दे सकता है? अष्टावक्र जी कहते हैं कि गन्ना टेढ़ा-मेढ़ा होता है, लेकिन उसका रस मीठा ही होता है। इसलिए शरीर पे मत जाओ, आत्मा को देखो, वह सबके भीतर एक समान देवीप्यमान है। जो आत्मा को जानता है, उसे और कुछ जानना शेष नहीं रहता।

गन्ना टेढ़ा-मेढ़ा होता है, लेकिन उसका रस मीठा ही होता है। इसलिए शरीर पे मत जाओ, आत्मा को देखो, वह सबके भीतर एक समान देवीप्यमान है। जो आत्मा को जानता है, उसे और कुछ जानना शेष नहीं रहता।

अच्छी बात कही कि मेरा पिया तो मेरे हृदय में बसता है, दुनिया के पिया कोई विदेश में होगा, कोई आर्मी में है, तो देश के बॉर्डर पर होगा, कोई कहीं होगा; पर मेरा पिया तो मेरे हृदय में बसता है, वो कहीं आता-जाता नहीं है। जब ढूँढ़ते हैं, तो ज़रूर प्राप्ति होती है और उस परमेश्वर को अपने हृदय में पाकर के हम धन्य हो जाते हैं। इसीलिए भक्ति के लिए लगन की आवश्यकता है, जब तक हमारे अंदर लगन नहीं होगी, हम उस परमेश्वर को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। इसलिए बहुत से जन्म हुए याद भी नहीं रहता कि किसका कब जन्म हुआ; 84 लाख योनियां हैं, जिनमें भरमते-भरमते मनुष्य जन्म मिला है। यह बात बार-बार सत्संग में सुनाई जाती है कि 84 लाख योनियों में कष्ट पाने के बाद मनुष्य का शरीर मिलता है। हम सब बहुत भाग्यशाली हैं, जो हमें मनुष्य योनी मिली है। इस दुर्लभ मनुष्य योनी में उस परमेश्वर की खोज

**वस्तु अमोलक दई मेरे सतगुरु,
किरपा कर अपनायो।**

वह ज्ञान अमोलक वस्तु है, उसका कोई मौल नहीं है। वही अमोलक वस्तु हमारे गुरु महाराज जी ने हमें दी है। तो रामनाम के जप से हमारा जीवन आज भी तर गया, आगे भी तरता रहेगा; यह रामनाम का सुमिरण ही तो जीव के कल्याण का रास्ता है।

FOR MEDITATION ONE NEEDS TO KNOW WHERE TO FOCUS ATTENTION

MATA SHRI RAJESHWARI DEVI

Dear Premies, we are conducting satsang programs at many locations. There is a two-day program at Dakpathar (Dehradun) and then at many locations in Delhi.

Without the spiritual teaching shared by Saints, The earth would have been destroyed many times over

Scores of people gather to listen attentively to spiritual discourses given by Saints. People like to understand these teachings. Divine bliss is hidden within man, not outside. Life is limited and we must understand those important spiritual goals that are left to be accomplished. Saints say:

Now is the time to get up and work for evolution,

Nanak said that after death the opportunity is lost

All those who are born will die. But the worldly attractions are so strong that the man gets entangled and forgets that this is his temporary abode. Yaksha asked Dharamraj—What is the most surprising thing in this world? Dharamraj replied that man loses his parents and children to death, yet he continues to think unabated about household chores

only without making any preparations. This indeed is most surprising.

Saints and Holy Scriptures have unanimously concluded, That love for Holy Name is the high reward for performing great noble deeds

Today, a woman came along with her son-in-law and said that it is with your great blessings that he joined us today for the spiritual program as usually he is not interested. I told her that some people are afraid that lessons from Saints may lead to inner transformations. But Saints are here for helping others. If you look at our history, you'll see that sinners like Ratnakar, Angulimal and Ajamil were transformed by contact with Saints. Guru Nanak Ji says:

"My teacher shared the spiritual knowledge,

It dispelled darkness and ignorance,

With God's blessings one meets Saints,

Their teachings enlighten the heart."



Saints come to this world to share their spiritual treasures but man does not understand this. Rich, poor and people from all forms of life come to me and I find they do not have inner happiness. We all work from morning to evening but do not feel satisfied.

This implies that our daily chores will not lead to inner joy. Saints say that man can find true happiness only through Holy Name. Many people believe in a single teacher. Our books tell us that Dattatreya had 24 teachers. He partook teachings from each of them and finally met the teacher who shared Holy Name with him and his thirst

for knowledge got quenched. The word for teacher is Guru, 'Gu' means darkness and 'Ru' means light. So Guru is one whose teachings dispel darkness or ignorance. One finds inner peace only through a wise Guru.

Many people say that they sit in meditation practice but they find it difficult to focus their minds. First you need to know what to concentrate or rest your mind on, and only then do you place it there. So one must first learn the objective and then focus the mind on it. One cannot see his reflection if the water is moving, similarly the mind cannot concentrate until it is trained. Peace and stillness allows mind to focus effectively. King Janak saw a dream. He dreamt that the enemies attacked and took over his kingdom and killed many people. King's sons also got captured. He dreamt that he escaped from the palace and ventured into the jungle to save himself. In a state of extreme hunger and thirst, he came across an old woman living in a small hut.

The King asked her for some food, the woman replied that she already ate and the King can cook a rice and lentil mix for himself. The King then

gathers wood and lights a fire. He prepares the food with great difficulty and finally puts the meal on a big leaf to eat. But suddenly two bulls appear from nowhere and are fighting with each other. They spoil the food prepared.

The King begins to cry and his hiccups wake him up. He is amazed at this dream and he questions whether in reality he is a king or a beggar (who begged the old woman for food). He calls his senior ministers and shared his dream with them, and asks them a simple question – whether his present reality of being a king is true or his dream reality of being a beggar is true? Not being at peace, the King spoke with many learned people but none was able to satisfy him. He then announces that he will award the kingdom to the person who satisfies his deep thirst for true knowledge.

We reach the final phase of our life without asking the purpose for it. Upon birth we knew nothing, not even who our father and mother are. We knew no language. In the final phase of our lives, the eyes get weak and blurry, the hair turn white, back gets curved and the skin turns loose. But we still don't question the purpose of life.

Wise teachers prod us to wake up from this slumber and search for the divine nectar hidden inside. On partaking it man becomes divine. But man loses his energies in worldly pleasures. To reach gold buried beneath, man has to put efforts and dig. Similarly, our wise teachers guide us to seek within our hearts. Lord Krishna tells Arjuna to turn his senses inwards like a tortoise who withdraws his limbs. But to do that one needs to know the technique as well.

King Janak spoke to many learned men but his doubts were not cleared. Anyone who could not satisfy King's questions was put in jail. One day, young boy Ashtavakra was playing with his friends. These kids teased Ashtavakra that his father is in jail and they wouldn't play with him. Ashtavakra came home crying and asked his mother about his father. She told him that his father was jailed by King Janak as he couldn't give detailed explanations to the King's questions. She also told him that not just the highest seat of the palace but also the entire kingdom would be awarded to the person who gives the correct answers, and that no one has yet satisfactorily answered the King's queries.

कार्तिक मास के पंचदिवसीय त्योहारों का महोत्सव

(धनवंतरी जयंती, नरक चतुर्दशी, दीपावली, गोवर्धन पूजा व भैया दूज के पौराणिक सन्दर्भ, मर्म और आज की प्रासंगिकता)

स

नातन संस्कृति में कार्तिक मास को अत्यंत पवित्र संधि बेला में जब मौसम में परिवर्तन आता है, तब प्रकृति भी नवीनीकरण के दौर से गुजरती है, वैसे ही मनुष्य के शरीर, मन और समाज के शुद्धिकरण, सौहार्द्ध और आत्मिक अनुशासन के लिए कार्तिक के पंच दिवसीय पर्वों की श्रृंखला सबमें उत्साह और अध्यात्म भाव का संचार कर देती है।

1. धनवंतरी जयंती
एवं धनतेरस- कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को मनायी जाने वाली यह तिथि 'धनतेरस' और 'धनवंतरी जयंती' के नाम से प्रसिद्ध है। पौराणिक मान्यता के अनुसार इसी दिन समुद्र मंथन से भगवान धनवंतरी अमृत कलश और औषधि लेकर प्रकट हुए थे। धनवंतरी, चिकित्सा-विज्ञान एवं आयुर्वेद के आदि देव माने जाते हैं। उनके द्वारा लाए गए अमृत एवं आयुर्वेद ने रोग, क्लेश और मृत्यु के भय को दूर

करने का मार्ग दिखाया। यह पर्व स्वर्स्थ जीवन, शुद्धता, स्वच्छता और उत्कृष्ट जीवन व्यवस्था का प्रतीक है, साथ ही यह औषधीय पौधों, स्वच्छता-अभियान और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों के प्रयोग का संदेश देता है। धनतेरस पर बर्तन या धातु क्रय की परंपरा सतत समृद्धि, शुद्धता और नूतन ऊर्जा का प्रतीक है, जो सबको सकारात्मकता तथा

उद्यमिता की ओर उन्मुख करती है।

2. नरक चतुर्दशी (रूप चौदस/छोटी दीपावली)

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की यह तिथि बुराई पर अच्छाई की जीत में नारी शक्ति की सहभागिता का महापर्व है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, असुर नरकासुर के अत्याचार से त्रस्त

लोकों को मुक्त करने हेतु भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी पटरानी रुक्मिणी जी की सहायता से नरकासुर का वध कर दिया था। इस युद्ध में नरकासुर द्वारा बंदी बनायी गई कन्याओं को भगवान श्री कृष्ण ने सम्मानपूर्वक अपनाया, जो सम्मानजनक पुनर्वास और मानवता के श्रेष्ठ उदाहरण के रूप में देखा जाता है। इस दिन किए जाने वाले अभ्यंग स्नान (तेल-मालिश, उबटन) शरीर और मन की शुद्धि का प्रतीक है। नरक चतुर्दशी का भाव है- आंतरिक दोष, अज्ञान, और नकारात्मकता से मुक्ति पाकर आत्मिक प्रकाश और शक्ति के पथ पर बढ़ना।

3. दीपावली- यह पंच

दिवसीय त्योहारों का केन्द्रीय पर्व है, जो अंधकार से प्रकाश, अज्ञान से ज्ञान और बुराई से अच्छाई की ओर अग्रसर होने का विजय-पर्व है। यह मान्यता है कि भगवान रामचंद्र के 14 वर्ष वनवास के दौरान रावण पर विजय प्राप्त कर अयोध्या आगमन के अवसर पर खुशी में दीपावली मनाई गयी थी। इस पर्व के अनेक अन्य कारण भी बताए गए हैं। यह महापर्व



स्वच्छता अभियान का भी राष्ट्रीय पर्व है। इस दिन तक लोग घर, मोहल्ला, शहर, दुकान, मंदिर, सबकी सफाई, रंग-रोगन, स्वच्छता करते हैं, जो सामाजिक स्वास्थ्य के साथ

को स्थिर करती हैं।

5. भैया दूज (यमद्वितीया) कार्तिक शुक्ल द्वितीया को मनायी जाने वाली यह तिथि भाई-बहन के पावन



पर्यावरण संरक्षण की भी प्रेरणा देता है। गुरु भक्तों के लिए यह अंतर्मुखी साधना और आत्मज्योति की जागृति का भी पर्व है। इस रात का जागरण, सत्य के लिए सजगता, धैर्य, और अनुशासन की शिक्षा देता है। दीपोत्सव के दीये केवल धी/तेल जलाने या रोशनी के लिए नहीं, बल्कि मन और समाज में **सत्यम्-शिवम्-सुंदरम्** के प्रसार का भी प्रतीक हैं। यह पर्व सहदयता, दान, सहयोग, मेहनत और ईश्वरीय विश्वास का भी प्रतीक है।

4. गोवर्धन पूजा एवं अन्नकूट- दीपावली के अगले दिन गोवर्धन पूजा होती है। यह पर्व भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत की पूजा, गौ-रक्षा एवं प्राकृतिक संसाधनों की महत्ता का स्मरण कराता है। श्रीकृष्ण ने बृजवासियों को समझाया कि प्रकृति, वन, जल, पर्वत और पशुधन हमारे जीवन के आधार हैं। इनका संरक्षण किया जाना सृष्टि संतुलन के लिए अनिवार्य है। गोवर्धन पूजा और अन्नकूट सामाजिक समरसता, प्राकृतिक प्रेम, वानस्पतिक संपदा एवं जैव विविधता के संरक्षण का संदेश देती है। गाँवों में सामुदायिक भोजन, गोधन पूजा, और हल्कर्षण आदि परंपराएं पर्यावरण रक्षा, शाकाहार, कृषि समृद्धि और सहअस्तित्व की भावना

प्रेम की प्रगाढ़ता और रक्षा के लिए वचन देने के दायित्व का पर्व है। पौराणिक कथा के अनुसार, यमराज अपनी बहन यमुनाजी के आमंत्रण पर उनके घर भोजन को गए और बहन से मिले। यमुना ने भाइयों की समृद्धि, रक्षा और अकाल मृत्यु से बचाव के लिए यह प्रतीक पर्व बना दिया और अपने भाई से इसका वचन भी ले लिया। भैया दूज '**स्नेह**' और '**भावनात्मक सुरक्षा**' की अभिव्यक्ति का पावन उत्सव है, साथ ही यह समाज के पारिवारिक ताने-बाने को सुदृढ़ बनाता है। सम्मान, प्रेम, आत्मीयता व विश्वास इनके प्रसार का संदेश ये पर्व देता है। आध्यात्मिक, सामाजिक और नैसर्गिक संदेश देने वाले इन पंचदिवसीय पर्वों की श्रृंखला मानव के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य को सशक्त करने की वैज्ञानिक प्रक्रिया है। ऋतु परिवर्तन की संधि बेला में स्नान, स्वच्छता, दीपावली पर साफ-सफाई का अभियान, गोवर्धन पूजा में गोधन के संवर्धन की भावना की प्रगाढ़ता ये सभी पर्यावरण, जैव विविधता, ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक समरसता के उद्दीपन का प्रतीक पर्व हैं। इतना ही नहीं, भौतिक और आध्यात्मिक समृद्धि का सामंजस्य, संपत्ति के साथ संतोष, ज्ञान के साथ

आचरण और परिश्रम के साथ साधना इन पांचों त्योहारों की आत्मा है। नरकासुर वध के बाद श्रीकृष्ण द्वारा बंदी कन्याओं को सम्मान से अपनाना, शोषण-विरोध, पुनर्वास एवं नारी सम्मान की उच्च भावना का जागरण करता है। धनवंतरी के प्राकृत्य से स्वास्थ्य एवं 'आयुर्वेद' के प्राकृतिक

सनातन संस्कृति का हर पर्व न केवल बाह्य उल्लास का अवसर है, अपितु वह आत्म-चिंतन, साधना और सामाजिक सौहार्द का भी माध्यम है। हमारे जीवन, स्वास्थ्य, संबंध, प्रकृति और अध्यात्म के गहरे सूत्रों से भी जुड़ा हुआ है। इन पर्वों के पीछे छिपे प्रतीकात्मक अर्थ, ऋतु परिवर्तन के साथ मानव तन-मन को संतुलित करने की विधियाँ, समाज और प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व का संदेश छिपा है। धनवंतरी जयंती या धनतेरस नाम से मनाए जाने वाले इस पर्व का स्वास्थ्य एवं समृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहने का संदेश देता है। यह एक उपासना पर्व है, जिसका संबंध समुद्र मंथन से जुड़ी उस पौराणिक कथा से है। कहते हैं कि कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को समुद्र मंथन से भगवान् धनवंतरी अमृत कलश लेकर प्रकट हुए। वे देवताओं के वैद्य हैं और आयुर्वेद के प्रवर्तक माने जाते हैं। उनकी



दर्शन का प्रचार होता है। दीपावली की रात 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' (अंधकार से प्रकाश की ओर) के साथ अपने भीतर के अज्ञान को मिटाकर, ज्ञान और ईश्वरीय प्रेम का उजारा फैलाने की प्रेरणा देती है।

आधुनिक युग के लिए भी ये पर्व प्रासंगिक हैं और सामाजिक सुधार तथा पर्यावरण प्रदूषण को रोकने में भी सहायता देते हैं। इन त्योहारों में छिपे सिद्धांत आज की सामाजिक, पारिवारिक, पर्यावरणीय एवं आर्थिक समस्याओं का समाधान सुझाते हैं। स्वच्छता, संयम, प्रेम, उद्यम, प्रकृति संरक्षण, महिला सम्मान, सामाजिक समरता, भाईचारा और स्वस्थ जीवनशैली आदि मूल्यों का अनुपालन आजीवन कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। यह मुहूर्त केवल उत्सव का नहीं, साधना, सेवा, उपकार और नवचेतना का है। अतः इन पर्वों का सही मर्म समझकर जीवन में उतारें, तभी इन पर्वों की सार्थकता है।

अतः कार्तिक मास के ये पंचदिवसीय त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि वे मानवता और प्रकृति की चिरंतन रक्षा, विकास और दिव्यता के शाश्वत सूत्र हैं।

भगवान् विष्णु के अवतार के रूप में उपासना की जाती है। यथा-

ॐ धन्वंतरये अमृतकलशहस्ताय सर्वामयविनाशनाय, त्रैलोक्यनाथाय श्रीमहाविष्णवे नमः॥

धन तेरस के रूप में यह पर्व जीवन में धन संग्रह के लिए पात्र का क्रय और सोना चांदी आदि कीमती धातुओं के संचय के लिए सचेष्ट होने का संदेश सबको सामूहिक रूप से देता है। इस दिन धातुओं (विशेषतः चांदी/तांबे) का क्रय किया जाता है। यह एक प्रतीक पर्व है- रोग-रहित जीवन एवं आयुर्वेदिक जीवनशैली अपनाने का। चिकित्सा, जल, प्रकाश और धातु ये चारों तत्व मानव जीवन की रक्षा के आधार हैं। यह पर्व उद्यमिता और धन संचय के सही मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। जहां तक नरक चतुर्दशी पर्व का संबंध है, यह असुरता के अंधकार से मुक्ति पाने का पर्व है। इसका संबंध एक पौराणिक कथा से है। कहते हैं कि इसी दिन श्रीकृष्ण ने राक्षस नरकासुर का अपनी पटरानी रुक्मिणी के सहयोग से वध किया था और उसकी कैद से 16,100 कन्याओं को मुक्त करा दिया था। श्री कृष्ण ने उन्हें सम्मानपूर्वक स्वीकार

कर समाज को नारी मर्यादा का सम्मान करने का संदेश दिया। यह पर्व सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने का संदेश देता है। सच कहिए तो यह अज्ञान, राग-द्रेष और लोभ रूपी नरक से बाहर निकलने का प्रतीक पर्व है। प्रातः स्नान, उबटन, और तिलक से देह-शुद्धि और आत्म-शुद्धि की भावना का संचार करता हुआ यह पर्व नारी सम्मान, स्वच्छता, और पुरुषत्व के सही स्वरूप की शिक्षा भी देता है।

दीपावली उत्सव आत्मदीप का उत्सव है। इसका संबंध श्रीराम का 14 वर्षों के वनवास से अयोध्या लौटने की खुशी से भी जुड़ा है। इस पर्व

पर श्रीलक्ष्मी, गणेश, सरस्वती की पूजा धन, बुद्धि और विद्या की प्राप्ति का साधन जुटाने का संदेश देता है। यह पर्व कार्तिक अमावस्या की रात में दीपक जलाकर गणेश लक्ष्मी की पूजा की जाती है। दीप जलाते समय यह मंत्र उच्चारण करना शुभ माना जाता है-

**शुभं करोति कल्याणं आरोग्यं धनसंपदा।
शत्रुबुद्धिविनाशाय दीपञ्चोत्तिर्नमोऽस्तुते॥**

दीपावली पर्व का धार्मिक व आध्यात्मिक महत्व तो है ही सामाजिक एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण से भी यह अति महत्वपूर्ण है। दीपावली हमें सिखाती है कि अंधकार चाहे बाह्य हो या आंतरिक, उसे प्रकाश से ही मिटाया जा सकता है। घरों की सफाई, सजावट और दीयों का जलाना यह स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और मानसिक प्रसन्नता का अभ्यास प्रदान करता है। यह व्यापार के नव आरंभ, लेखा-जोखा को सही तरीके से व्यवस्थित करने की प्रेरणा भी देता है गोवर्धन पूजा प्रकृति और अन्न का आदर करने की प्रेरणा देता है। इससे जुड़ी पौराणिक कथा भी बहुत प्रेरणादायक है। कहा जाता है कि भगवान् श्रीकृष्ण ने जब इंद्र के अभिमान को खंडित करते हुए गोवर्धन पर्वत को

उठाया, तब उन्होंने अपने समसामयिक लोगों को एकजुटता और प्रकृति की रक्षा का भार उठाने का भी संदेश दिया। इस पर्व पर अन्नकूट, गोवर्धन का चित्र बनाना प्रकृति पूजा, कृषि और पशु-पालन का महत्व भी दर्शाता है। इंद्र पूजा की बजाय प्राकृतिक संसाधनों का सम्मान यह संदेश है कि 'हम प्रकृति के साथ हैं, न कि उसके विरुद्ध'। इस पर्व से पर्यावरण संतुलन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की प्रतिष्ठा भी बढ़ती है।

कार्तिक मास के पंच दिवसीय त्योहारों में अंतिम पर्व है भैया दूज, जो भाई-बहन के पवित्र संबंधों को प्रगाढ़ बनाने वाला पावन पर्व है। पौराणिक कथाओं के अनुसार इस दिन यमराज अपनी बहन यमुनाजी के घर गए थे, और बहन ने उन्हें तिलक कर सत्कार किया। यमराज ने वचन दिया 'जो बहन इस दिन अपने भाई को आमंत्रित कर तिलक करेगी, उसके भाई की आयु बढ़ेगी।' यह भाई-बहन के स्नेह, सेवा और सुरक्षा का प्रतीक पर्व है। भाई-बहन का यह बंधन किसी भी धर्म, जाति या वर्ग से परे, शुद्ध प्रेम और विश्वास का प्रतीक है। यह पर्व नारी की गरिमा को सम्मान देने वाला और पुरुष का कर्तव्यबोध कराने वाला है। यदि हम इन पांचों पर्वों का क्रम देखें तो ये कुल मिलाकर हमें शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक संतुलन की यात्रा कराते हैं। कुल मिलाकर सनातन संस्कृति की प्रासंगिकता कार्तिक मास के ये पंच दिवसीय पर्व, ऋतु परिवर्तन के समय पर मनुष्य को न केवल आत्मशुद्धि, धन-साधना और संबंध सुधार की ओर ले जाते हैं, बल्कि वे हमें यह भी सिखाते हैं कि जब हम प्रकृति, परंपरा और परमात्मा से जुड़ते हैं, तभी सच्ची समृद्धि, शांति और शुभता प्राप्त होती है। इन पर्वों का सही अर्थ केवल दीप जलाना नहीं, बल्कि अज्ञान, अहंकार और असंतुलन के अंधकार को जलाना भी है। ■



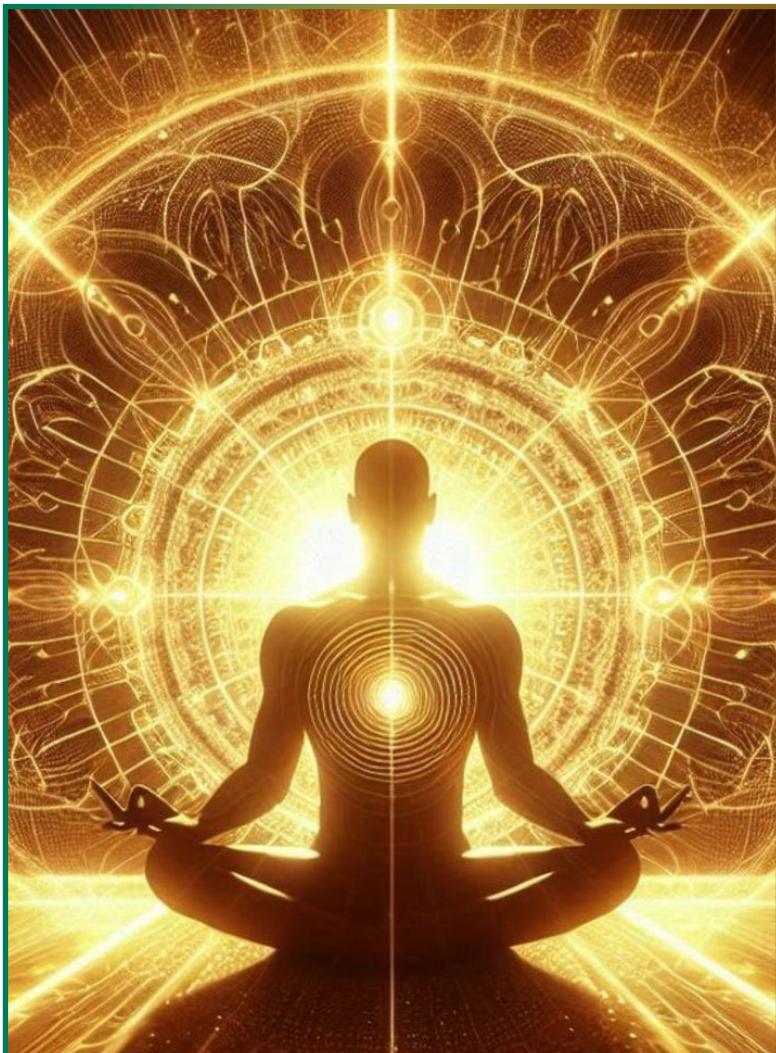
ध्यान से जागती है आंतरिक ऊर्जा

ऊर्जा हमारे जीवन की एक अनमोल शक्ति है। जब हम इसका सही उपयोग करते हैं, तो यह हमारे व्यक्तित्व और सोच को बेहतर बनाती है। लेकिन अगर हम अपनी ऊर्जा को क्रोध, घृणा, ईर्ष्या-द्वेष अथवा नकारात्मक विचारों में व्यतीत कर दें, तो मन और शरीर दोनों इससे प्रभावित होते हैं। यह हमें अंदर से कमजोर कर देता है और हमारी आंतरिक शांति छीन लेता है। इसलिए जरूरी है कि हम अपनी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में लगाएं, जिससे न केवल हमारा स्वयं का विकास हो, बल्कि समाज को भी लाभ हो। ध्यान एक ऐसी प्रक्रिया है, जो मन को शांत, स्पष्ट और संतुलित बनाती है। लेकिन ध्यान के लिए केवल चुप बैठना पर्याप्त नहीं, उसमें एक विशेष शक्ति की आवश्यकता होती है, और वह है आंतरिक ऊर्जा। यह केवल शरीर की शक्ति नहीं होती-मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक ऊर्जा भी होती है।

जब हम ध्यान करते हैं, तो हमारा शरीर विश्राम की स्थिति में होता है, लेकिन मन को जागरूक रहना होता है। यह जागरूकता तभी आती है, जब हमारे पास पर्याप्त आध्यात्मिक साधना का ऊर्जा होती है। यदि हम थके हुए या व्यग्र हों, तो ध्यान करना कठिन हो जाता है। अच्छा ध्यान तभी होता है, जब भीतर ऊर्जा का स्तर सही हो। साधना की लय में इस ऊर्जा को ‘प्राण’ या ‘शक्ति’ कहा गया है, जो हमारे शरीर में प्रवाहित होती है। गहरी सांस लेना, योग करना

या प्रकृति में समय बिताना इस ऊर्जा को बढ़ाने में मदद करता है। जब यह प्राण ऊर्जा अच्छी तरह बहती है, तो ध्यान करना सहज और प्रभावकारी हो जाता है। ध्यान भी इस ऊर्जा को बढ़ाता है। जब हम शांत बैठते हैं, तो हमारे बिखरे हुए विचार शांत हो जाते हैं और अंदर की ऊर्जा एक स्थान पर केंद्रित होने लगती है। इससे हम अधिक ऊर्जावान, शांत और ध्यानस्थ अनुभव करते हैं। इस तरह ऊर्जा और ध्यान एक-दूसरे को संबल देते हैं। ऊर्जा ध्यान को गहराई देती है और ध्यान ऊर्जा को बढ़ाता है। ध्यान में ऊर्जा एक मूक साथी की तरह हमारे साथ होती है। यह हमारी सांसों और जागरूकता के साथ धीरे-धीरे बहती है, हमें वर्तमान क्षण में टिकाती है और भीतर की ओर ले जाती है। जब हम इस ऊर्जा को ग्रहण करते हैं, तो हमें भीतर से शक्ति और शांति मिलती है, जो आत्मज्ञान और आत्म-विकास के मार्ग में सहायता करती है।

ध्यान के समय यह ऊर्जा केवल मौन नहीं रहती, सक्रिय शक्ति बनकर काम करती है। यह हमारे विचारों और भावनाओं को निर्मल करती है, तनाव दूर करती है और शांति को बढ़ावा देती है। भले ही यह दिखती नहीं, लेकिन यह हमें अपने अंतर से जोड़ती है और हमारे भीतर चेतना की शक्ति को बलवान करती है। इसलिए हमें नियमित रूप से ध्यान करने की जरूरत है ताकि हमारी सुषुप्त चेतना जागृत होकर ऊर्ध्वगमी बनकर हमारी आंतरिक ऊर्जा का पुंज बन सके। ■



वेदों और पुराणों में बार-बार कहा गया है कि ईश्वर संपूर्ण जगत में व्याप्त है, हर व्यक्ति और वस्तु में मौजूद है। लेकिन इसके बावजूद कई धार्मिक शास्त्रों में तीर्थ-स्थानों की भी महानता बताई गयी है और इस कारण प्राचीन समय से भारत में तीर्थयात्रा की परम्परा रही है। ऐसे में लोगों के मन में यह

जिज्ञासा होना स्वाभाविक है कि अगर ईश्वर को कहीं भी महसूस किया जा सकता है, तो क्या तीर्थ-स्थलों का भ्रमण व्यर्थ है या फिर यह सिर्फ एक धार्मिक मान्यता है। इस संबंध में एक संत ने कहा है कि ‘यदि आप मेहंदी के पत्ते को चीरें तो उसमें लालिमा नहीं होती, लेकिन जब उसे पीसकर मेहंदी बनायी जाती है, तभी उसका रंग सामने आता है। ठीक उसी प्रकार तीर्थ-स्थल भी पवित्र ऊर्जा-केंद्र होते हैं, जहाँ श्रद्धा व नियमानुसार ध्यान-पूजन करने पर ही दिव्यता का अनुभव होता है। तीर्थ-स्थल पर जाने से अनजाने में हुए पाप भी नष्ट हो जाते हैं। यह यात्रा मन, मस्तिष्क और आत्मा की शुद्धि हेतु होती है, जिससे जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह सुनिश्चित होता है। तीर्थयात्रा को पर्यटन नहीं बल्कि यह एक आत्मिक

प्रवास और साधना का माध्यम माना है। यात्रा का मूल उद्देश्य प्रभु नाम स्मरण और साधु सेवा होना चाहिए।’

माना जाता है कि तीर्थ-स्थान ऊर्जा-आधारित स्थल होते हैं, यानि ये ऊर्जा के उच्च केंद्र माने जाते हैं। इन तीर्थ-स्थलों पर आध्यात्मिक साधना की ऊर्जा होती है। जो साधक की चेतना को उच्चतर स्तर पर ले जा सकता है। जब हम घर या समाज के बीच होते हैं, तब हमारे मन में अनेक जिम्मेदारियाँ, विचार और विकर्षण होते हैं। तीर्थ में जाने से मन एक दिशा में केंद्रित होता है

और वह है ईश्वर की ओर जाना। तीर्थयात्रा करना एक तपस्या के समान है, जिसमें शरीर को कष्ट देकर यात्रा की जाती है। इस दौरान आप शुद्ध भावों से परिपूर्ण रहते हैं और आपका एक ही उद्देश्य रहता है कि आपको ईश्वर के करीब पहुंचना है। ईश्वर सब जगह है, लेकिन तीर्थ एक

ऐसे केन्द्र हैं, जहाँ मन की स्थिरता को दिशा

मिलती है। वहाँ जाना स्वयं को ईश्वर के अधिक समीप अनुभव करना है। शास्त्रों में कहा गया है कि तीर्थ में जाकर यदि व्यक्ति सच्चे भाव से प्रायश्चित्त करता है, तो उसके पूर्व जन्मों के कर्मों का क्षय संभव है। आदि शंकराचार्य ने पूरे भारत में चार धाम की स्थापना की थी ताकि लोग जीवन में कम से कम एक बार तीर्थयात्रा करें। स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि ‘तीर्थयात्रा आत्मा की शुद्धि है, न कि केवल देह का भ्रमण’।

इसलिए अपने आध्यात्मिक विकास के लिए समय-समय पर तीर्थयात्रा अवश्य करें; लेकिन उसका एकमेव उद्देश्य प्रभु दर्शन ही होना चाहिए, यही तीर्थयात्रा की सार्थकता है। ■

जो तेरे चरणों में आ चुके हैं

सफल हुआ है उन्हीं का जीवन, जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।
उन्हीं की पूजा हुई है पूरण, जो तेरे चरणों में आ चुके हैं। । टेक॥

न पाया तुझको अमीर बन के, न पाया तुझको फकीर बन के।
उन्हीं को तेरा हुआ है दर्शन, जो तेरे चरणों में आ चुके हैं॥ 1॥

जहाँ भी जिसने तुम्हें पुकारा, वहीं प्रकट हो दिया सहारा।
कटे हैं उनके दुःखों के बंधन, जो तेरे चरणों में आ चुके हैं॥ 2॥

शरण तुम्हारी जो जन भी आते, कृपा से तेरी वे मुक्ति पाते।
भक्ति का भंडार उन्होंने पाया, जो तेरे चरणों में आ चुके हैं॥ 3॥

भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के सुअवसर पर झंडारोहण, बाल प्रतियोगिता एवं जनकल्पाण समारोह का आयोजन

श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली। लोकमान्य तिलक ने कहा था कि “स्वराज हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और इसे हम लेकर रहेंगे” इसी युक्ति को चरितार्थ करते हुए हमारे अमर शहीदों ने अपने प्राणों की आहुति देकर एवं असद्य जेल यातना ओं को झेलकर भारत को अंग्रेजों की परतंत्रता से 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्र कराया। स्वतंत्रता सभी को

दिवस के सुअवसर पर हंसज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर के तत्वावधान में श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में 15 अगस्त, 2025 को प्रातःकाल

हो जाता है कि हम अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता, एकता एवं अखण्डता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए सतत कार्यरत रहें और एक आदर्श नागरिक बनकर हर प्रकार से

राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान प्रदान करें। यही उन अमर शहीदों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस कार्यक्रम में आसपास क्षेत्र से लगभग 400 स्त्री-पुरुष और बालक-बालिकाएं शामिल हुए।



भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के सुअवसर पर परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी झंडारोहण के बाद राष्ट्रगान में शामिल हुए। तत्पश्चात उपस्थित जनसमूह को श्री माता जी ने संबोधित किया।

प्रिय है और स्वतंत्र वातावरण में ही कोई भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र विकास कर सकता है। इसी स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए हमारे अमर शहीदों ने सतत संघर्ष, क्रांति और आंदोलन कर देश को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराया। आज हम उन्होंने के बलिदान के परिणामस्वरूप स्वतंत्र राष्ट्र में निवास कर रहे हैं। हम अपने अमर शहीदों एवं स्वतंत्रता सेनानियों को शत-शत नमन करते हैं। इन्हीं स्वतंत्रता सेनानियों को नमन करने के लिए भारत के 79वें स्वतंत्रता

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी के करकमलों द्वारा संयुक्त रूप से झंडारोहण किया गया तथा राष्ट्रगान गाया गया। इस सुअवसर पर डॉ. माताश्री मंगला जी ने उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह दिन अपने शहीदों को याद करने तथा उनको नमन करने का दिन है। यह उन्हीं के त्याग, बलिदान और संघर्षों का परिणाम है, जो हम स्वतंत्र भारत में जीवन यापन कर रहे हैं। अब हम सभी देशवासियों का दायित्व

झंडारोहण से पहले श्री हंसलोक आश्रम परिसर में एक तिरंगा यात्रा निकाली गयी जिसमें देशभक्ति के प्रेरक नारों को लगाया गया, जैसे- ‘वंदे मातरम्’, ‘भारत माता की जय’, ‘हिन्दुस्तान जिंदाबाद’, ‘महात्मा गांधी अमर रहे’, ‘नेताजी सुभाष चन्द्र बोस अमर रहे’, ‘देश की आजादी अमर रहे’, ‘विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊँचा रहे हमारा’। सभी स्त्री-पुरुष और बालक-बालिकाएं दो पंक्तियों में चल रहे थे, जो सुंदर परिधानों से सुसज्जित

थे; उनके गले में तिरंगा पट्टा, सिर पर गांधी टोपी अथवा तिरंगा कैप और हाथों में तिरंगा झँड़ा था। ध्वनि विस्तारक यंत्र के माध्यम से देशभक्ति के नारे सर्वत्र गुंजायमान हो रहे थे। यात्रा का नेतृत्व श्री राकेश सिंह एवं कुमारी काव्या वर्मा ने किया।

तत्पश्चात् विभिन्न बाल प्रतियोगिताओं

बाद गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 11 बालक एवं बालिकाओं ने भाग लेकर देशभक्ति, प्रभु भक्ति और मानव चेतना को जाग्रत करने वाले गीतों एवं भजनों को गाकर सभी को प्रभावित किया। तत्पश्चात् भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 8 बालक बालिकाओं

को उपयोगी सामग्री सहित एक प्रमाणपत्र भी प्रदान किया गया। चित्रकला प्रतियोगिता में श्री निपुण सिंह पुत्र श्री सुभाष सिंह ने प्रथम, कुमारी अनामता अहमद पुत्री श्री सिकन्दर बख्त ने द्वितीय तथा कुमारी सुमाक्षी डिमरी पुत्री श्री गिरधारी लाल डिमरी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। गायन



भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के सुअवसर पर परमपूज्य श्री भोले जी महाराज, डॉ. माताश्री मंगला जी, महात्मागण, आश्रम सेवक तथा श्री हंसलोक सेवक/सेविकाएं एवं जूनियर सेवक

का आयोजन किया गया जिसमें कक्षा 8 से कक्षा 12 तक के बालक-बालिकाओं ने सहर्ष भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिताओं के आयोजक श्री विपिन मंडल और सुरेश वर्मा ने परीक्षण के पश्चात् बालक-बालिकाओं का चयन कर सूची बनाई हुई थी। श्री उमाकांत चौधरी, मानस स्वाई एवं राकेश सिंह को प्रतियोगिताओं की समीक्षा के लिए जज नियुक्त किया गया था। सर्वप्रथम चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 37 बालक और बालिकाओं ने भाग लेकर बांसुरी, बालकृष्ण, पृथ्वी सुरक्षा, नारी सशक्तिकरण, 'हर घर जल, हर घर नल' आदि कल्याणकारी परियोजनाओं के चित्रों को सुंदरतम ढंग से अंकित किया। इसके

ने भाग लिया। बालक-बालिकाओं ने देश प्रेम, नारी सशक्तिकरण एवं क्वांटम विज्ञान पर अपना भाषण प्रस्तुत किया। बालक-बालिकाओं द्वारा चुना गया विषय, शब्दों का चयन और उच्चारण बहुत ही स्पष्ट था जिसे सुनकर उपस्थित जनसमुदाय का ज्ञानवर्धन तो हुआ ही साथ ही वे अत्यधिक प्रभावित भी हुए।

हंसज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर की ओर से भाग लेने वाले सभी बालक-बालिकाओं को प्रोत्साहन स्वरूप सहभागिता प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। साथ ही जजों द्वारा दिए गए अंकों के आधार पर चित्रकला, गायन और भाषण प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बालक-बालिकाओं

प्रतियोगिता में कुमारी कशीश पुत्री श्री सूरजपाल सिंह प्रथम, कुमारी खुशबू पुत्री श्री भगीरथ द्वितीय तथा कुमारी गरिमा पुत्री श्री रमेश सनवाल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार भाषण प्रतियोगिता में कुमारी काजल पुत्री श्री विपिन मंडल प्रथम, श्री शिवम पुत्र श्री ओमवीर सिंह द्वितीय तथा कुमारी किरन छेत्री पुत्री श्री रूप बहादुर छेत्री ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इन सभी बालक-बालिकाओं को प्रोत्साहन स्वरूप हंसज्योति के प्रबंधक श्री मानस स्वाई तथा प्रबंधक सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम श्री राकेश सिंह द्वारा संयुक्त रूप से प्रथम स्थान प्राप्त बालक-बालिकाओं को स्टील वाटर बोतल, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वालों को स्कूल

बैग तथा तृतीय स्थान प्राप्त बालकों को लंच बॉक्स और प्रमाण पत्र प्रदान किया।

इस प्रकार बहुत ही उत्साह एवं प्रेरणास्पद वातावरण में स्वतंत्रता दिवस समारोह का समापन हुआ। तत्पश्चात् सामूहिक भण्डारे का आयोजन किया गया जिसमें सभी ने

प्रेमपूर्वक स्वादिष्ट भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

आज ही के दिन भगवान् श्रीकृष्ण का अवतरण दिवस ‘श्रीकृष्ण जन्माष्टमी’ भी था, इस अवसर पर जनकल्याण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें

आसपास क्षेत्र के सैकड़ों स्त्री-पुरुषों एवं बालकों ने भाग लेकर भगवान् श्रीकृष्ण के जीवन और दर्शन के बारे में जानकारी प्राप्त की। उपस्थित श्रद्धालुगण को सम्बोधित करते हुए महात्मा कृपानंद जी, महात्मा आत्मवेदानंद जी तथा महात्मा श्वेताम्बरीबाई जी ने श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व को मनाने के उद्देश्य को समझाया। उन्होंने कहा कि महापुरुषों के जन्मदिवस हमें उनकी शिक्षाओं को ग्रहण करने का संदेश देते हैं। हम जीवन में उनकी शिक्षाओं को आत्मसात कर व्यावहारिक रूप प्रदान करेंगे तो हमारा जीवन भी एक आदर्श जीवन बन सकता है। श्री सुरेश वर्मा, भूपिन्द्र धीमान, अनुराधा गुप्ता, पार्वती साहू ने सुंदर-सुंदर भजनों की प्रस्तुति की। आरती-वंदना के पश्चात् पंजीरी का प्रसाद वितरित किया गया। इन कार्यक्रमों का संचालन कुमारी प्रिया वर्मा एवं मनीषा दुबे ने संयुक्त रूप से किया। ■



भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के सुअवसर पर आयोजित बाल प्रतियोगिता में विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए प्रबंधक श्री मानस स्वार्द्ध एवं राकेश सिंह



भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के सुअवसर पर आयोजित बाल प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त विजेता एवं प्रबंध समिति के सदस्यगण

श्री हंस जयन्ती-125 वर्ष के सुअवसर पर विशाल जनकल्याण समारोह

सभी भगवद्भक्तों को जानकर अत्यंत हर्ष होगा कि हंसज्योति (ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर) के तत्वावधान में सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज की जयन्ती-125 वर्ष के सुअवसर पर 8 व 9 नवम्बर, 2025 (शनि-रवि.) सायं 6 से 9 बजे तक प्रतिदिन ऋषिकुल मैदान, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) में विशाल जनकल्याण समारोह आयोजित किया जा रहा है। इस समारोह में परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी के अध्यात्म-ज्ञान तथा जनकल्याण पर सारगर्भित प्रवचन होंगे।



योगीज्ञ परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

साथ ही अनेक आत्मानुभवी महात्मा/बाईंगण, प्रबुद्धजनों, समाज सेवकों एवं विद्वानों का प्रवचन और प्रसिद्ध भजन गायकों द्वारा भजन-गायन भी होगा। इस अवसर पर आत्म-जिज्ञासुओं को अध्यात्म-ज्ञान का व्यावहारिक बोध भी कराया जाएगा।

अतः आप इस समारोह में सपरिवार पधारकर आत्म-कल्याण का मार्ग प्राप्त कर अपने मानव जीवन को सार्थक बनायें। प्रेमी भक्तगण 8 नवम्बर को ही हरिद्वार पहुँचें तथा 9 नवम्बर को कार्यक्रम समाप्ति के पश्चात अपनी वापसी की व्यवस्था करके आएं। इस कार्यक्रम की सूचना अपने आसपास के क्षेत्र के प्रेमी भक्तों को अवश्य दीजिएगा।

नोट: सभी प्रेमी भक्त अपने साथ अपना आधारकार्ड और मतदाता पहचान पत्र अवश्य लेकर आयें।

निवेदक:-

हंसज्योति (ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर)

संपर्क सूत्र- 8800291788, 8800291288

इस जनकल्याण समारोह का सीधा प्रसारण हंसलोक T.V. पर दोनों दिन सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक किया जायेगा। www.youtube.com/@hanslokTV <https://www.facebook.com/Hanslok>

श्री हंसलोक सेवक सूचना

सभी श्री हंसलोक सेवक/सेविकाओं एवं जूनियर सेवकों को सूचित किया जाता है कि सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज की जयन्ती-125 वर्ष के सुअवसर पर 8 व 9 नवम्बर, 2025 को सायं 6 से 9 बजे तक प्रतिदिन ऋषिकुल मैदान, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) में विशाल जनकल्याण समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर श्री हंसलोक सेवक/सेविकाओं तथा जूनियर सेवकों का 7 से 10 नवम्बर, 2025 तक “सेवा शिविर” लगाया जा रहा है जिसमें सभी सेवक/सेविकाएं समारोह की व्यवस्था से संबंधित विभिन्न कार्यों में सेवा-सहयोग करेंगे। इस अवसर पर 7 नवम्बर, 2025 को अपराह्न 3 बजे से श्री हंसलोक सेवकों का ‘मार्गदर्शन शिविर’ रखा गया है जिसमें सभी सेवक/सेविकाओं का भाग लेना आवश्यक है। अतः सभी दस्तानायक अपने सहयोगी सेवक/सेविकाओं के साथ 6 नवम्बर की शाम तक अथवा 7 नवम्बर, 2025 की प्रातः 8 बजे तक हरिद्वार पहुँच कर अपनी-अपनी सेवा संभाल लें। जनकल्याण समारोह को सफल बनाने में आप सभी का विशेष रूप से सहयोग की अपेक्षित है।

निवेदक

श्री हंसलोक सेवक संगठन

अक्टूबर, 2025 के पर्व-त्योहार

- 1 अक्टूबर बुधवार- दुर्गा महानवमी पूजा □ 2 अक्टूबर गुरुवार- विजयादशमी एवं महात्मा गांधी जयंती □ 3 अक्टूबर शुक्रवार- पापांकुशी एकादशी □ 6 अक्टूबर सोमवार- शरद पूर्णिमा □ 10 अक्टूबर शुक्रवार- करवा चौथ □ 16 अक्टूबर गुरुवार- पावन जन्मदिवस माताश्री मंगला जी □ 17 अक्टूबर शुक्रवार- रमा एकादशी □ 18 अक्टूबर शनिवार- धनतेरस □ 21 अक्टूबर मंगलवार- दिवाली □ 22 अक्टूबर बुधवार- गोवर्धन पूजा □ 23 अक्टूबर गुरुवार- भाई दूज □ 28 अक्टूबर मंगलवार- छठ पूजा



79वें स्वतंत्रता दिवस समारोह - श्री हंसलोक आश्रम, नई दिल्ली



प्रवचन : माता श्री मंगला जी



प्रथम - भाषण (काजल कुमारी)



प्रथम - गायन (कशिश)



प्रथम - चित्रकला (निपुण)

नई दिल्ली, भाटी। हंसज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर के तत्वावधान एवं परमपूज्य श्री भोले जी महाराज तथा डॉ. माता श्री मंगला जी के पावन सानिध्य में दिनांक 15 अगस्त, 2025 को **79वें स्वतंत्रता दिवस** का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें श्री हंसलोक आश्रम के अनेक महात्मा, बाईंगण, कर्मचारी, सेवक तथा क्षेत्र के प्रेमीभक्तों ने भाग लिया। इस समारोह में माता श्री मंगला जी ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर स्वतंत्रता का वास्तविक महत्व एवं देश के प्रति नागरिकों के कर्तव्य समझाया। इस अवसर पर भाषण, गीत एवं चित्रकला प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र के 10 से 18 वर्ष के बालक-बालिकाओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। अंत में, सर्वश्रेष्ठ तीन विजेताओं को पुरस्कृत किया गया तथा सभी सहभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया।

विजयदशमी की हार्दिक शुभकामनाएं!

विजयदशमी के दिन प्रभु श्री राम ने रावण का वध करके बुराई पर अच्छाई की जीत हासिल की थी। यह पर्व हमें सिखाता है कि चाहे बुराई कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, अंत में सत्य और धर्म की ही विजय होती है। यह पर्व अधर्म पर धर्म की जीत का प्रतीक है, जो धर्म के मार्ग पर चलता है उसके जीवन में सफलता, समृद्धि और खुशियां आती हैं। इसलिए अपने अंदर के अहंकार रूपी रावण को मारकर राम रूपी सत्य और धर्म को स्थापित करें, यही इस पर्व को मनाने का उद्देश्य है। विजयदशमी “दशहरा” की आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं! - परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी



आध्यात्मिक सत्संग-भजन कार्यक्रम के वीडियो **YouTube** पर उपलब्ध हैं। **YouTube** पर **HANSLOKTV** चैनल को अवश्य सब्सक्राइब करें और श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी तथा संत-महात्माओं के सत्संग-भजन से आत्मलाभ प्राप्त करें।



MOB: 8800291788 / 8800291288



/hanslok